नवम्बर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 11

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

नवम्बर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 11

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन, ताशी देकि

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- मध्यम मार्ग का मौलिक ज्ञान 1
- शांति और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए परम पावन दलाई लामा को शिवानंद शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया 2
- निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रमुख ने शहर की यात्रा के दौरान 'वन चाइना पॉलिसी'का त्याग किया 3
- सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अरुणाचल प्रदेश में राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों को संबोधित किया 4
- सिक्योंग हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय में तिब्बतियों और धर्मशाला के स्थानीय भारतीयों के बीच संबंधों की मजबूती पर जोर दिया 5
- भिक्षु जिग्मे ग्यात्सो को बिना किसी मुकदमे के एक साल से अधिक समय तक हिरासत में रखा गया 6
- पूर्व राजनीतिक कैदी और तिब्बती भिक्षु विद्वान का लंबी बीमारी के बाद निधन 7
- तिब्बती न्गाबा कीर्ति मठ के भिक्षु को ढाई साल की जेल की सजा 8
- सांसद धोंडुप ताशी की गंगटोक की आधिकारिक यात्रा संपन्न 9
- अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों का सातवां सम्मेलन दिल्ली में आयोजित 10

समाचार -

- तिब्बत समर्थन समूहों ने सीटीए को दुनिया भर में बसे तिब्बतियों के वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दी 11
- भारत-तिब्बत मैत्री संघ का नवमां राष्ट्रीय सम्मेलन बिहार के राजगीर में संपन्न 12
- टीपा के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से तिब्बत-लद्दाख के बीच सांस्कृतिक और राजनयिक संबंधों को बढ़ावा 13
- तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का चेक संसद में तिब्बत मुद्दे भाषण 14
- सांसद छेरिंग डोल्मा तवांग तीर्थ यात्रा के उद्घाटन में शामिल हुए 15
- 'फाइंडिंग द कॉमन ग्राउंड' बैठक ताइपे में आयोजित 16
- मैक्सिको की कांग्रेस में 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत'संसदीय समूह गठित 17
- 11वें तिब्बत लॉबी दिवस पर ऑस्ट्रेलियाई सांसदों से परम पावन 14वें दलाई लामा के उत्तराधिकार की रक्षा के लिए नीति बनाने का आग्रह 18

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

❖ तिब्बत समर्थक भारतीय संगठनों ने लिया जोरदार संघर्ष का संकल्प

तिब्बत समर्थक भारतीय संगठनों (तिब्बत सपोर्ट ग्रुप) के नवम्बर, 2022 में सम्पन्न अखिल भारतीय सम्मेलन में सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया है कि तिब्बती संघर्ष को और अधिक सुव्यवस्थित तथा प्रभावी किया जायेगा। भारत तिब्बत मैत्री संघ, भारत तिब्बत संघ एवं भारत तिब्बत सहयोग मंच समेत सभी तिब्बत समर्थक संगठनों ने आपसी समन्वय को अधिकाधिक सुदृढ़ करते हुए संघर्ष को आगे बढ़ाने का निष्चय व्यक्त किया। तिब्बत की निर्वासित सरकार, जो कि वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से मतदान द्वारा तिब्बतियों की निर्वाचित सरकार है, के राजप्रमुख (सिक्योंग) माननीय पेम्पा त्सेरिंग ने अपने संबोधन में बलपूर्वक स्पष्ट किया कि तिब्बत समस्या का समाधान भारत के व्यापक हित में है। भारत को चाहिये कि चीन के साथ द्विपक्षीय वार्ता में तिब्बत के प्रष्न को भी प्रमुखता से उठाये। हिमालय परिवार के संयोजक तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ अधिकारी माननीय इन्द्रेष कुमार ने तिब्बत संबंधी अमरीकी नीति की सराहना की और उसे अमरीकी हित में बताया। उन्होंने सलाह दी कि भारत सरकार उस नीति का अनुकरण नहीं करे, क्योंकि भारत की स्थिति, आवष्यकता तथा राष्ट्रीय शक्ति अमरीका से भिन्न है। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति, आवष्यकता और राष्ट्रीय शक्ति के अनुरूप तिब्बत संबंधी नीति अपनाये तो उचित और व्यावहारिक होगा।

सम्मेलन में भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान के संदर्भ में भारत तिब्बत मैत्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. आनंद कुमार ने स्पष्ट किया कि तिब्बत के सवाल पर भारत की विभिन्न विचारधाराओं से जुड़े संगठन एकजुट हैं। तिब्बत के पूर्व राज्याध्यक्ष तथा बौद्ध धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा के योगदान की विषेष रूप से चर्चा करते हुए उन्होंने भारतीय संसद में उन्हें आमन्त्रित करने और उनके विचार सुनने की मांग की।

हिमाचल प्रदेष केन्द्रीय विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा चिंतक प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री के मतानुसार चीन की तुलना में भारत अपनी राष्ट्रीय शक्ति में लगातार विस्तार करे तभी चीन की उपनिवेषवादी नीति पर रोक लगेगी। उन्होंने भारत पर चीनी आक्रमण की याद दिलाते हुए भारतीय संसद के 14 नवबंर, 1962 के उस सर्वसम्मत प्रस्ताव पर प्रकाष डाला जिसमें भारतीय भूभाग को चीनी चंगुल से मुक्त कराने का संकल्प लिया गया है। उन्होंने सप्रमाण कहा कि वर्तमान भारत सरकार विस्तारवादी चीन सरकार के विरूद्ध अडिग खड़ी है।
तिब्बत समर्थक सभी संगठनों ने निष्चय किया है कि वे भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों,जैसे-विद्यार्थी,युवा,महिला,पूर्वसैनिक,जनप्रतिनिधि,पूर्वअधिकारी-कर्मचारी,अधिवक्ता तथा अन्य स्वयंसेवी संगठनों के साथ मिलकर तिब्बत में जारी क्रूर चीनी नीति का पर्दाफाष करेंगे और बतायेंगे कि इससे भारत की क्षति हो रही है। तिब्बत में पर्यावरण के विनाष तथा वहाँ की प्राकृतिक संपदा की बर्बादी से भारतीय पर्यावरण को गंभीर खतरा है। चीन सरकार तिब्बत की पहचान मिटाने में लगी है। "संसार का तीसरा ध्रुव" कहलाने वाले तिब्बत में ग्लेसियर सिकुड़ते और घटते जा रहे हैं। यह पूरे विष्व के लिये, विषेषकर एषियाई देषों के लिये चिंताजनक है क्योंकि तिब्बत से निकलकर अनेक नदियाँ विभिन्न देषों में जाती हैं। तिब्बत में अनेक नदियों पर ऊँचे बांध बनाकर एवं उनकी धारायें बदलकर चीन तिब्बत के जल-स्रोत का इस्तेमाल पड़ोसी देषों में "लिक्विड बम" अर्थात "वाटर बम" की तरह कर रहा है। अपनी इच्छानुसार वह पड़ोसी देषों में "सूखा या बाढ़" ला सकता है। भारतीय तिब्बत समर्थक संगठनों की मांग है कि विष्व समुदाय चीन की पर्यावरण विरोधी गतिविधि पर रोक लगाये।

तिब्बत समर्थक भारतीय संगठनों का नारा है- स्वतंत्र तिब्बत सुरक्षित भारत। लेकिन तिब्बती समुदाय चीन से तिब्बत को "वास्तविक स्वायत्तता" की मांग कर रहा है। दलाई लामा तथा निर्वासित सरकार को चिंता है कि चीन द्वारा तिब्बत की पहचान मिटा देने के बाद पूर्ण स्वतंत्रता भी महत्वहीन हो जायेगी। ऐसी दषा में मध्यममार्ग नीति पर जोर देते हुए उनका कहना है कि चीन सरकार अपने संविधान एवं राष्ट्रीयता कानून के अनुसार वैदेषिक मामले तथा प्रतिरक्षा अपने पास रखे और अन्य सभी विषयों, जैसे- कृषि, षिक्षा आदि पर कानून बनाने का अधिकार तिब्बतियों को दे दे। इससे संप्रभुता सम्पन्न चीन के अंतर्गत तिब्बतियों को स्वषासन का अधिकार मिल जायेगा।

सम्मेलन में कैलाष-मानसरोवर यात्रा को चीन द्वारा आर्थिक कमाई का साधन बनाने की तीखी आलोचना करते हुए विष्वास व्यक्त किया गया कि तिब्बत समस्या का समाधान होते ही हम भारतीय कैलाष-मानसरोवर की निःषुल्क यात्रा बेरोकटोक कर सकेंगे। पूर्व में ऐसा ही था। उस समय तिब्बती भी भारत में बौद्ध स्थलों का भ्रमण स्वतंत्रतापूर्वक करते थे। सम्मेलन में चीन की सीमा के रूप में चीन की दीवार का जिक्र करते हुए चीन की दीवार के बाहर के क्षेत्र को चीन का अवैध कब्जा बताया गया।

तिब्बत समर्थक भारतीय संगठन तिब्बती समुदाय की मध्यममार्ग नीति के अनुकूल तिब्बती संघर्ष के साथ हैं। वे दलाईलामा के शांति-अहिंसा के विचार के साथ आंदोलन कर रहे हैं। चीन सरकार को चाहिये कि वह विष्वजनमत का सम्मान करते हुए दलाईलामा एवं तिब्बत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के साथ पुनः वार्ता प्रारंभ करे। वार्ता ही सर्वोत्तम उपाय है। इसके लिये वह उपयुक्त वातावरण का निर्माण करे। तिब्बत में मानवाधिकरों का सम्मान, तिब्बती पर्यावरण एवं प्राकृतिक संपदा का संरक्षण-संवर्धन तथा तिब्बत के इतिहास का प्रामाणिक लेखन जरूरी है। चीन अपनी हठधर्मिता छोड़े तो उसका भी हित होगा। वह तिब्बत समर्थक देषों, संगठनों तथा व्यक्तियों को धमकाना बंद करे।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

❖ मध्यम मार्ग का मौलिक ज्ञान

dalailama.com, 25 नवंबर, 2022

थेगछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। 25 नवंबर की सुबह 65 देशों से लगभग 5000 लोग परम पावन दलाई लामा का प्रवचन सुनने के लिए धर्मशाला के मुख्य तिब्बती मंदिर त्सुक्लखांग में एकत्रित हुए। इनमें कोरिया के 350 भिक्षुओं-भिक्षुणियों और आम लोगों का एक समूह था, जिन्होंने उनसे नागार्जुन की 'मूलमध्यमकारिका' पर प्रवचन देने का अनुरोध किया।

मंदिर के प्रांगण से गुजरते हुए परम पावन की दाहिनी ओर कोरियाई मठ के महंत भिक्षु जुंगवूक किम चल रहे थे। हमेशा की तरह गुजरते समय परम पावन मुस्कुराते रहे और भीड़ में मौजूद अपने अनुयायियों का हाथ हिलाकर अभिवादन करते रहे। मंदिर के चारों ओर की बालकनी से उन्होंने नीचे गली में लोगों का हाथ हिलाकर अभिवादन किया। मंदिर के अंदर गांदेन ट्री रिनपोछे, शरपा छोजे और जंगचे छोजे के साथ-साथ दक्षिण भारत पुन:स्थापित कई महान मठों के महंतों का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर हल्के भूरे रंग के वस्त्रों को धारण किए हुए कोरियाई दल ने भिक्षुओं और भिक्षुणियों के नेतृत्व में तेजी से 'हृदय सूत्र' का जाप किया।

इसके बाद परम पावन ने अपना संबोधन शुरू किया, 'आज मेरे कोरियाई धर्म मित्र यहाँ हैं। कोरिया पारंपरिक रूप से बौद्ध देश है और मैं कई कोरियाई लोगों से मिलने के दौरान उनकी बौद्ध धर्म में समर्पित रुचि से प्रभावित हुआ हूं। मैं आप सभी को यहां देखकर खुश हूं।'

परम पावन ने कहा, 'बेशक, हर किसी को अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। हमारी विभिन्न धार्मिक परंपराओं के अलग-अलग दार्शनिक दृष्टिकोण हैं, लेकिन सभी एक सामान्य संदेश देते हैं कि कोई किसी का अहित न करे और जितना हो सके दूसरों की मदद करे। मैं एक भिक्षु और एक धार्मिक व्यक्ति हूं और विभिन्न धार्मिक परंपराओं में मेरे कई मित्र हैं। चूंकि ये सभी परंपराएं सम्माननीय हैं, इसलिए मैं जहां तक संभव हो, अन्य धर्मों के पूजास्थलों की यात्रा करने का अवसर लेता हूं।'

उन्होंने कहा, 'आदरणीय मठाधीश जुंगवूक किम ने इन प्रवचनों का आयोजन किया है जिसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। हम कई वर्षों से मित्र रहे हैं जिसके दौरान हमें धर्म प्रवचन देने और प्राप्त करने के कई अवसर मिले हैं।'

परम पावन ने 'द सेगमेंट डिलिंग विद द मंत्र ऑफ द फर्स्ट सुप्रीम ग्लोरियस वन (प्रथम सर्वोच्च गौरवशाली के मंत्र से संबंधित खंड)' से एक छंद उद्धृत किया। इस संदर्भ ग्रंथों के संग्रह 'तेंग्यूर' में कई जगह प्राप्त होता है।

उन्होंने बताया कि जीवन के तीन लोकों का अस्तित्व स्वभाव से ही अस्तित्व में नहीं हैं, हालांकि वे हमें ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे कि उनके पास स्वयं का एक आवश्यक कोर है। क्योंकि हम इस तरह की धारणा से चिपके रहते हैं, हम आसक्ति, क्रोध आदि विकसित करते हैं। तो हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि चीजों का कोई आंतरिक, आवश्यक कोर नहीं होता है। जब

आप जीवन के तीन लोकों के संबंध में चीजों की किसी भी आवश्यक प्रकृति की इस शून्यता को समझते हैं तो यह आपके इस बोध से चिपकना कम कर देता है कि चीजें और अनुभव ठोस हैं और इसलिए उनसे लगाव और घृणा को सीमित करता है।

परम पावन ने टिप्पणी की कि यहाँ तक कि क्वांटम भौतिकी भी कहती है कि जहाँ वस्तुएँ एक प्रकार का वस्तुगत रूप में प्रतीत होती हैं, वे वास्तव में उस तरह से अस्तित्व में होती नहीं हैं। मध्यमक या मध्यम मार्ग दर्शन में कहा गया है कि चीजें अपने आप में किसी प्रकार का वस्तुगत अस्तित्व रखती हैं, लेकिन वास्तव में वह उस तरह से मौजूद नहीं होती हैं। हम उस तरह के वस्तुगत अस्तित्व से चिपके रहते हैं। हालांकि, जब हम समझते हैं कि अस्तित्व के तीन क्षेत्रों में चीजें किसी भी आवश्यक प्रकृति से खाली हैं तो यह चीजों और अनुभवों की दृढ़ता के प्रति हमारे लगाव को कम कर देता है और इस तरह हमारे लगाव और घृणा को कम कर देता है। आम तौर पर, हम सुखद अनुभवों से जुड़े होते हैं और इससे इस आधार पर जुड़े होते हैं कि उनका कुछ ठोस अस्तित्व है।

दूसरी पंक्ति बताती है कि यदि आप समझते हैं कि चीजों का कोई आवश्यक सार नहीं है तो उनके स्वतंत्र, अंतर्निहित अस्तित्व पर पकड़ कम हो जाती है। और चूंकि चीजें जिस रूप में दिखाई देती हैं उस रूप में उनका अस्तित्व नहीं होता है, यदि आप उनका विश्लेषण करें कि वे कैसे अस्तित्व में हैं, तो आप समझ जाएंगे कि वे केवल पदनाम के रूप में मौजूद हैं।

आप शुद्ध मन से अगर अस्तित्व की इस अंतर्भूत कमी को समझ लेते है तो भवचक्र में उलझे रहने से बचे रह सकेंगे। इसके साथ ही आप चीजों की प्रकृति को समझकर सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव रखेंगे। आप कामना करेंगे कि वे सभी प्राणी मोहपाश में न फंसे। इस तरह शून्यवाद की दृष्टि वस्तुओं की दृढ़ता और इहलौकिक जीवन में आसक्ति को कम करने में मदद करती है।

दुख से बचने की चाहत करते हुए सभी प्राणी समान रूप से सुख और आनंद की चाह रखते हैं। शून्यता की समझ के साथ-साथ भवसागर में भटक रहे भव्य प्राणियों के लिए करुणा विकसित करके आप विधि और ज्ञान का अनुभव करेंगे। आप संचय, तैयारी, प्रेक्षा, साधना और समाधि के पांच स्तरों से बढ़ते हुए उपर चढ़ेंगे। इस तरह आप अपने जीवन को सफल बनाएंगे और अंतत: ज्ञानोदय तक पहुंचेंगे।

परम पावन ने जानकारी दी कि 'मुझे कोरिया में हाल की त्रासदी के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। वहां भगदड़ में इतने सारे लोग मारे गए। आइए मृतकों और घायलों के लिए प्रार्थना करें।

उन्होंने कहा,'मेरी साधना दो स्तरों वाली है- बोधिचित्त मन को जाग्रत करने के लिए और शून्यता की अंतर्दृष्टि। शून्यता क्रोध को कम करता है जबकि

बोधिचित्त आत्म-श्लाघा को कम करता है। यदि आपमें आत्म- श्लाघा भावना कम हैतो आपके मन में दूसरों के लिए अधिक स्थान होगा। आप आराम से और आनंद से भरे रहेंगे। मन की शांति आंतरिक शक्ति लाती है। इसलिए बोधिचित्त स्वयं और दूसरों के लिए सुख का स्रोत है। जब आप दूसरों की मदद करते हैं तो आप अपने लक्ष्यों को भी पूरा करते हैं।

हम बौद्धधर्म को माननेवाले लोग हैं। यदि हम शिक्षाओं को सुनें, मनन करें और दूसरों तक पहुंचाएं तो यह जन्म जन्मांतरों तक में मदद करेगी। हम तत्परता से दूसरों की सेवा करेंगे। शांतिदेव का 'बोधिसत्व के मार्ग में प्रवेश' ग्रंथ का यह अंश हमें प्रोत्साहित करता है:

जब तक अंतरिक्ष है,
और जब तक भव्य जीव दुनिया में हैं,
तब तक मैं भी रहना चाहूंगा
ताकि दुनिया के दुख को दूर करने में मदद करता रहूं।

'यह जीवन को सार्थक बनाने का तरीका है।'

'आज दुनिया के सभी आठ अरब लोग एकसमान रूप से सुख चाहते हैं और उनकी इच्छा है कि उनके जीवन में कभी दुख न आए। यद्यपि हम एकसमान रूप से ऐसा चाहते हैं, लेकिन हमारा अनियंत्रित मन हमारे अंदर तनाव पैदा करता है। मोह,लोभ, क्रोध और घृणा हमारे मन की शांति को भंग करते हैं। दुनिया में शांति के बारे में बहुत बातें होती हैं, लेकिन इसकी जड़ें हमारे भीतर शांति में होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से हम देख सकते हैं कि हथियारों पर निर्भर रहना और बल का प्रयोग बेकार बातें है। मैं प्रतिदिन विश्व में शांति के लिए प्रार्थना करता हूं और आशा करता हूं कि भविष्य में कोरियाई प्रायद्वीप में भी और अधिक शांति होगी।

उन्होंने आगे कहा कि जहां तक ग्लोबल वार्मिंग की बात है, तो यह बहुत गंभीर मुद्दा है। जिस तरह से दुनिया गर्म होती जा रही है, उससे ऐसा लगता है कि यह अंततः भस्म हो जाएगी। इस बीच, हमें दूसरों के साथ सहयोग और उनकी सेवा करनी चाहिए।

"मेरे धर्म भाइयों और बहनों, मैं आपसे अच्छे नेकदिल बनने की अपील करना चाहता हूं और यह याद रखने का आग्रह करना चाहता हूं कि चीजों में किसी अंतर्निहित तत्व का अभाव होता है और इस तरह से, दूसरों के हित के लिए खुद को समर्पित करें।

'शून्यवाद को समझने के लिए हमारे पास नागार्जुन का अनुसरण करने वाले नालंदा परंपरा के आचार्यों के कार्य हैं, जिन्होंने अपने समय में गहन और व्यापक दोनों मार्गों के बारे में लिखा था। नालंदा के कई आचार्यों ने उनके 'मूलमध्यमकारिका'और 'प्रिसीयस गारलैंड'का अनुसरण किया और उनके कारण और तर्क को भी नियोजित किया। नागार्जुन दूसरे बुद्ध की तरह थे।'

'मुझे इन आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रीय ग्रंथ मूल्यवान लगते हैं, जिसमें चंद्रकीर्ति का 'मध्यम मार्ग प्रवेशिका' और इसपर उनकी स्वरचित व्याख्या भी शामिल है। इससे यह ग्रंथ समझने में आसान हो जाती है। इन ग्रंथों का अध्ययन करना ही उनके प्रति सबसे बड़ा सम्मान है।

'इन दिनों बहुत से लोग बुद्ध की शिक्षाओं में नई-नई रुचि ले रहे हैं। वैज्ञानिक अपने मनोविज्ञान के अध्यापन में और दार्शनिक अपने अध्यापन में उनके 'प्रतीत्य समुत्पाद' के दर्शन से आश्चर्यचकित हैं। हमें भी उनके शिक्षण पर ध्यान देना चाहिए और फिर उस पर चिंतन और मनन करना चाहिए।

❖ शांति और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए परम पावन दलाई लामा को शिवानंद शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया

tibet.net, 04 नवंबर, 2022

धर्मशाला।शिवानंद वर्ल्ड पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रिंस ईश्वर रामलचमन माभेका ज़ुलु के नेतृत्व में फाउंडेशन ने 01 नवंबर 2022 को परम पावन दलाई लामा को उनके निवास स्थान हिमाचल प्रदेश के धर्मशालामें इस वर्ष के शिवानंद शांति पुरस्कार से सम्मानित किया।

यह पुरस्कार परम पावन दलाई लामा को दुनिया में शांति, अहिंसा और मानवता के बीच एकता को बढ़ावा देने में उनके सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए दिया गया है। इससे पहले यह पुरस्कार दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपतिनेल्सन मंडेला, विनी मदिकिज़ेला मंडेला, जनरल वी के सिंह, महामहिम राजा ज्वेलिथिनी सद्भावना का-भेखुज़ुलु और राजकुमार मैंगोसुथु बुथेलेज़ी जैसे महान नेताओं को प्रदान किया जा चुका है।

इस अवसर पर प्रिंस ईश्वर रामलछमन माभेका ज़ुलू ने कहा कि परम पावन दलाई लामा को शांति, प्रेम और करुणा के प्रकाश स्तंभ के रूप में यह पुरस्कार प्रदान करना उनके लिए सम्मान की बात है और उनका यह विशेषाधिकार है। शिवानंद वर्ल्ड पीस फाउंडेशन ने विभिन्न ग्रामीण नस्लीय जातियों के बीच अच्छे संबंधों को बढ़ावा देने के लिए पूरे अफ्रीका में शांति स्तंभ स्थापित किए हैं। यह फाउंडेशन पूरी मानवता के बीच विविधता में एकता को बढ़ावा देने का काम कर रहा है।

❖ निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रमुख ने शहर की यात्रा के दौरान 'वन चाइना पॉलिसी'का त्याग किया

Shilongtimes.com, 14 नवंबर, 2022

शिलांग, 13 नवंबर।निर्वासित तिब्बती सरकार के केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग (अध्यक्ष) पद मई 2021 में संभालने वाले पेन्पा छेरिंग ने मेघालय की दो दिवसीय यात्रा की। छेरिंग लोबसांग सांगेय के उत्तराधिकारी हैं।

मेघालय दौरे में उन्होंने तिब्बती समुदाय से मुलाकात की, लुम्परिंग में बौद्ध मठ का दौरा किया और मुख्य सचिव डीपी पहलंग सहित राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों से भी मुलाकात की।

शनिवार को सिक्योंग ने विधायक अम्पारीन लिंगदोह के साथ शिष्टाचार मुलाकात भी की और शिलांग में तिब्बती समुदाय के लिए उनका सहयोग मांगा।

शिलांग टाइम्स ने तिब्बत में रह रहे लगभग 60 लाख तिब्बतियों और दुनिया भर में फैले तिब्बतियों के समक्ष उपस्थित वर्तमान चुनौतियों के मद्देनजर सिक्योंग के साथ एकांत मुलाकात और बात की।

सिक्योंग छेरिंग के अनुसार, भारत के विभिन्न राज्यों में लगभग 76,000 तिब्बती बसे हुए हैं। तिब्बती जनसंख्या का जनगणना का आंकड़ा इकट्ठा करना सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व में मौजूदा सीटीए की मुख्य पहलों में से एक है।

यह पूछे जाने पर कि क्या तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) में बसे तिब्बतियों को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य कल्याणकारी उपाय सहजता से प्राप्त हो रहे हैं,छेरिंग ने कहा कि उन्हें शिक्षा और अन्य सुविधाएं मिल रही हैं, लेकिन उनकी संस्कृति और भाषा के अस्तित्व के खत्म हो जाने का खतरा है। छात्रों को तिब्बती भाषा नहीं सिखाई जाती है।

उन्होंने कहा,'क्या आप जानते हैं कि हम तिब्बती भाषा लिखने में देवनागरी लिपि का उपयोग करते हैं और सभी भारतीय ग्रंथों को पढ़ सकते हैं? भारत से आए बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद से हमारा भारत के साथ घनिष्ठ संबंध बना हुआ है।

सिक्योंग छेरिंग एक पटु वाक्य और बहुत अच्छे यायावर हैं। उन्होंने पिछले साल नवंबर में एक मिशन के तहत स्विट्जरलैंड की यात्रा की थी और स्विस नेशनल काउंसिल में स्विस सरकार को तिब्बत पर चीन की निरंतर जकड़न के खिलाफ कड़ा कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया था। चीन पर दबाव बनाने के लिए दुनिया के देशों को समझाने के लिए सिक्योंग की यात्रा जारी है और हम उम्मीद करते हैं कि भारत भी इस पर कोई रुख अपनाएगा। आखिरकार, भारत चीन का सबसे करीबी पड़ोसी है।

सिक्योंग ने जैव विविधता के नुकसान और यांग्त्ज़ी नदी की घाटी में चीन के तीन डैम के निर्माण से तिब्बत के सामने आने वाले जलवायु खतरों की ओर भी इशारा किया। ये तीनों डैम दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रो प्रोजेक्ट डैम है और इसने सैकड़ों लोगों को विस्थापित किया है और इससे निचले इलाके के देशों में बाढ़ की आशंका बढ़ गई है।

2020 में भारी बारिश के कारण यांग्त्ज़ी नदी में बाढ़ आ गई, जिससे जानमाल का भारी नुकसान हुआ था। सिक्योंग ने कहा,'भारत को चीन से बात करनी चाहिए कि वह अपनी नदियों का उपयोग कैसे करता है और उन पर क्या बनाता है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र को तीसरे ध्रुव और एशिया के जल मीनार के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसकी नदियां एशिया में लगभग दो अरब लोगों को जल की आपूर्ति करती है। इसे देखते हुए भारत को जलवायु सम्मेलनों में इस एजेंडे को आगे बढ़ाना चाहिए।'

उन्होंने तिब्बती संस्कृति और विश्वदृष्टि के लिए दूसरा खतरा तिब्बतियों की वर्तमान पीढ़ी द्वारा भारी संख्या में हो रहे पलायन को बताया। वे 25 विभिन्न देशों में पढ़ाई कर रहे हैं और अब अपनी भाषा, संस्कृति और धार्मिक रीति-रिवाजों तक को नहीं जानते हैं और अब शायद उनमें तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने का गुस्सा भी नहीं है। हमें तिब्बतियों की युवा पीढ़ी को ललकारने और उन्हें यह बताने की आवश्यकता है कि परम पावन दलाई लामा क्या कहते हैं, 'कभी हार मत मानो। एक दिन तिब्बत आजाद होगा और हम अपनी जमीन पर लौट जाएंगे।'

सीटीए के पास एक धर्म और संस्कृति नाम का विभाग भी है जो बौद्ध धर्म के आदर्शों को संरक्षित करने और उसे बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। हमारी चुनौती हमेशा निर्वासित तिब्बतियों के कल्याण की देखभाल करने की रही है।

अमेरिका तिब्बती अधिकारों का कट्टर समर्थक रहा है। जून 2021में अमेरिका ने चीन का मुकाबला करने के लिए एक कानून पारित किया है।'सिक्योंग ने कहा कि इस कानून के 'पॉलिसी विद रेस्पेक्ट टू तिब्बत (तिब्बत के संबंध में नीति)'खंड मेंबीजिंग स्थित अमेरिकी दूतावास के राजनीतिक खंड के भीतर एक तिब्बत इकाई की स्थापना की बात कही गई है जब तक कि चीन में अमेरिकी चेंगदू वाणिज्य दूतावास बहाल नहीं हो जाता है या जब तक अमेरिकी वाणिज्य दूतावास ल्हासा में नहीं खोलने दिया जाता है।

यह नया कानून अमेरिका के 2020के तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम (तिब्बत नीति एंड सपोर्ट एक्ट) की अंतर्निहित भावनाओं की पुष्टि करता है और कहता है कि दलाई लामा के पुनर्जन्म मामले में तिब्बती बौद्ध लामाओं के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करने और चीनी हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए अमेरिका को अपने विदेश मंत्री को सहयोगी देशों के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

यूनाइटेड स्टेट पॉलिसी एंड इंटरनेशनल एंगेजमेंट ऑन द सिलेक्शन ऑर रिइनकार्नेशन ऑफ द दलाई लामा एंड रिलिजियस फ्रीडम ऑफ तिब्बतन बुद्धिस्ट (दलाई लामा के उत्तराधिकार या पुनर्जन्म और तिब्बती बौद्धों की धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की नीति और वैश्विक साझेदारी)'खंड में यह विधेयक 2021 के कंसोलिडेटड एप्रोप्रिएशन एक्ट में उल्लेखित इसी तरह की बात की फिर से पुष्टि करता है। इस कानून में यह भी कहा गया है कि 14वें दलाई लामा और भविष्य में किसी भी दलाई लामा के उत्तराधिकारी या पुनर्जन्म को मान्यता देने की प्रक्रिया में चीनी सरकार या कोई अन्य सरकार द्वारा किसी भी तरह का हस्तक्षेप स्पष्ट रूप से तिब्बती बौद्धों और तिब्बती लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में दुरुपयोग माना जाएगा।

विधेयक आगे तिब्बती बौद्धों की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का आह्वान करता है। इस विधेयक में कहा गया है कि अमेरिका 15वें दलाई लामा की पहचान करने और उन्हें स्थापित करने के लिए तिब्बती बौद्ध धार्मिक नेताओं के एकमात्र धार्मिक अधिकार का समर्थन करने के लिए सभी सहयोगियों और भागीदारों का आह्वान करता है। साथ ही 15वें दलाई लामा तय करने का अधिकार हथिया लेनेवाले चीनी सरकार के दावों का विरोध करने और तिब्बती बौद्धों की धार्मिक स्वतंत्रता में चीनी सरकार के हस्तक्षेप को अस्वीकार करने के लिए भी वह विश्व बिरादरी से अपील करता है।

सिक्योंग ने अंत में कहा कि अमेरिका की तिब्बत पर स्पष्ट नीति है। इसके

अलावा अन्य देशों की तिब्बत नीति आर्थिक प्राथमिकताओं के आधार पर तय किया जाता है।

शिलांग में तिब्बती समुदाय के सदस्यों ने सेटलमेंट अधिकारी और सांसद छेरिंग डोल्मा की अगुवाई में सिक्योंग और सीटीए प्रतिनिधिमंडल के लिए एक स्वागत समारोह का आयोजन भी किया।

शिलांग में सिक्योंग की पहली यात्रा ग्लोरी के प्लाजा में तिब्बती बाजार में थी जहां उन्होंने तिब्बती दुकानदारों के साथ बातचीत की और उनकी शिकायतों पर ध्यान दिया।

उसी दिन बाद में कई स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों और उच्च पदस्थ अधिकारियों ने सिक्योंग से शिष्टाचार भेंट की। इनमें पूर्वी शिलांग के विधायक अम्प्रीन लिंगदोह और शिलांग टाइम्स की संपादक पेट्रीसिया मुखिम, पूर्वी खासी हिल्स के उपायुक्त इसावंदा लालू और पूर्वी खासी हिल्स के पुलिस अधीक्षक सिल्वेस्टर नोंगटंगर शामिल थे।

❖ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अरुणाचल प्रदेश में राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों को संबोधित किया

tibet.net, 12नवंबर, 2022

धर्मशाला।सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने तवांग में तिब्बती समुदाय के साथ अपने कार्यक्रमों के समापन के बाद और शिलांग जाने से पहले 11 नवंबर 2022को अरुणाचल प्रदेश के राज्य और जिला अधिकारियों से मुलाकात की और उनसे बातचीत की।

वहां मोनपा युवाओं को सांस्कृतिक और धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और अन्य प्रमुख तिब्बती संस्थानों की सराहना करते हुएपश्चिम तामेंग जिले के उपायुक्त केसांग न्गुरुप दामा ने अपने परिचयात्मक संबोधन में क्षेत्र में चल रही सिक्योंग की आधिकारिक यात्रा को दो समुदायों के बीच घनिष्ठ संबंध को मजबूत करने की दिशा में सहयोगी उपाय के रूप में चिह्नित किया।

अपने संबोधन में गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए सिक्योंग ने अरुणाचल के नेताओं और लोगों का आभार व्यक्त किया। इसके बाद उन्होंने तवांग के ज़ोमखांग हॉल में एकत्रित स्थानीय अधिकारियों के समक्ष निर्वासन में घटती तिब्बती आबादी पर चिंता जाहिर की और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में दोनों समुदायों के बीच सहयोग को रेखांकित किया।

सिक्योंग ने आगे सीटीए की संरचना और कार्यप्रणाली के बारे में बताया और इस तरह के एक मजबूत निर्वासित समुदाय के निर्माण का श्रेय परम पावन दलाई लामा और भारत सरकार को दिया।

इसके अलावा, सिक्योंग ने सभा को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की क्रूर और स्वार्थी नीतियों के कारण तिब्बत के अंदर चल रहे असंतोष के बारे में बताया। विशेष रूप से उन्होंने परम पावन के पुनर्जन्म के मुद्दे पर बीजिंग के हस्तक्षेप की आशंका पर चिंता व्यक्त की। इसी तरह, उन्होंने तिब्बत के सुंदर पर्यावरण, विशेष रूप से नदी प्रणाली पर चीनी सरकार द्वारा की गई गड़बड़ी के बारे में भी बात की जो अरुणाचल और असम सहित निचले क्षेत्र के देशों को प्रभावित करेगी।

अपना संबोधन समाप्त करने से पहले सिक्योंग ने सभा से दुनिया के लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज के हित में चीन के खतरों से सतर्क रहने का आग्रह किया।

सीटीए में कार्मिक और आध्यात्मिक मामलों के विभाग के अध्यक्ष जंबे वांग्दी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा का समापन हुआ।

मोनपा इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स ने परम पावन दलाई लामा के सम्मान में संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उपायुक्तमोन मिमांग त्सोक्पा और तवांग मोनपा एम्प्लॉइज सोसाइटी के कार्यालयों से सिक्योंग को प्रशंसा के प्रतीक चिह्न प्रदान किए गए।

❖ सिक्योंग हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय में तिब्बतियों और धर्मशाला के स्थानीय भारतीयों के बीच संबंधों की मजबूती पर जोर दिया

tibet.net, 24 नवंबर, 2022

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और कालोन त्रिशूर प्रो. भिक्षु सामदोंग रिनपोछे ने 24 नवंबर, 2022 को धर्मशाला में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री को स्वामी सत्यानंद स्टोक्स सम्मान समारोह में शिरकत की। उन्होंने इस अवसर पर वहां आयोजित 'तिब्बत संवाद' में भी भाग लिया।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हिमाचल प्रदेश टीचर्स एसोसिएशन (सीयूएचपीटीए) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल सहित फैकल्टी सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया।

प्रो. कुलदीप चंद को सम्मानित किए जाने पर बधाई देते हुए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने तिब्बतियों को लगातार समर्थन देने के लिए कुलदीप चंद के प्रति आभार व्यक्त किया और धर्मशाला के शिक्षा क्षेत्र में उनकी लंबी सेवाओं की सराहना की। इसके अलावा, उन्होंने समुदायों के बीच मेल-जोल बढ़ाने के महत्व को देखते हुए विश्वविद्यालय के सम्मेलन कक्ष में उपस्थित अतिथियों, प्रोफेसरों और छात्रों को तिब्बत और तिब्बतियों से संबंधित कई मुद्दों से अवगत कराया।

विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन केंद्र स्थापित करने के विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रयासों की सराहना करते हुए सिक्योंग ने संस्थान और तिब्बती प्रशासन के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए सूचना प्रदान करने में सीटीए के सहयोग जैसे आवश्यक संसाधन देने समेत सभी तरह के सहयोग का आश्वासन दिया। इसी तरह कालोन त्रिशूर प्रो. सामदोंग रिनपोछे ने प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री का सम्मान और तिब्बत मुद्दे का लगातार समर्थन करने और उसकी वकालत करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

❖ भिक्षु जिग्मे ग्यात्सो को बिना किसी मुकदमे के एक साल से अधिक समय तक हिरासत में रखा गया

tibet.net, 4 नवंबर, 2022

जिग्मे ग्यात्सो नाम के एक तिब्बती भिक्षु को चीन की सरकार ने बिना किसी मुकदमे के ही एक साल से अधिक समय तक हिरासत में रख रखा है।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, जून 2021 में किन्हाई प्रांतीय पुलिस अधिकारियों ने जिग्मे ग्यात्सो को एक स्नातक समारोह के दौरान छोंगोन बौद्ध विश्वविद्यालय में साथी भिक्षुओं को कविता की पुस्तकें वितरित करने के आरोप में गिरफ्तार किया।

भिक्षु जिग्मे ग्यात्सो के बारे में कोई भी जानकारी उनकी मनमानी गिरफ्तारी के एक साल से अधिक समय से अज्ञात है। वह बिना किसी मुकदमे के हिरासत में बंद है।

36 वर्षीय जिग्मे ग्यात्सो मल्हो तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर (हुआंगनान) के दोसुम (चीनी: डुओसॉन्ग), युलगन (हेनान) और थोंगको देवा टाउनशिप के मूल निवासी हैं। उन्हें उनके तखल्लुस नाम 'नुब्लंग' से अधिक जाना जाता है और उन्होंने एक बार दक्षिण-पूर्वी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के ल्होका प्रिफेक्चर द्वारा आयोजित एक कविता प्रतियोगिता जीती थी। इस प्रतियोगिता में तिब्बत के तीनों क्षेत्रों के कवि भाग लेते हैं।

❖ पूर्व राजनीतिक कैदी और तिब्बती भिक्षु विद्वान का लंबी बीमारी के बाद निधन

tibet.net, 09 नवंबर, 2022

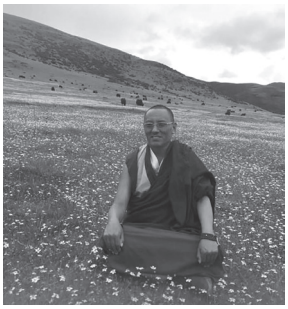

धर्मशाला। मनगढ़ंत राजनीतिक अपराध के आरोपों में छह साल जेल में बिताने वाले एक तिब्बती राजनीतिक कैदी का चीनी पुलिस हिरासत में गंभीर प्रताड़ना के कारण इस महीने की शुरुआत में निधन हो गया।

एक विश्वसनीय सूत्र ने कहा कि सिचुआन और कर्ज़े (चीनी: गंजी) तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर के सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो ने 02 अप्रैल 2012 को कोई कारण बताए बिना ही ड्रैकगो (लुहुओ) में एक बैठक से गेशे तेनज़िन पलसांग को गिरफ्तार कर लिया था। पलसांग को टेंगा के नाम से भी जाना जाता है। अगले 10 महीनों के दौरानउनके ठिकाने और सेहत के बारे में जानकारी अज्ञात रही।

सूत्र के अनुसार, झूठे राजनीतिक अपराधों के आरोपों में चेंगदू में चीनी अधिकारियों ने गेशे टेंगा सहित चार तिब्बती भिक्षुओं, दो तिब्बती भिक्षु शिक्षकों और ड्रेकगो मठ के एक रिनपोछे को छह-छह साल की जेल की सजा सुनाई। एक अन्य भिक्षु को पांच साल की जेल की सजा सुनाई गई और 36 तिब्बती लोगों और भिक्षुओं को कथित राजनीतिक अपराधों के लिए एक से दो साल तक की जेल की सजा सुनाई गई।

सूत्र ने कहा कि टेंगा उस समय ड्रैकगो मठ के वरिष्ठ कोषाध्यक्ष थे और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं थी। लेकिन कारावास के दौरान 'उन्हें चीनी पुलिस द्वारा बार-बार गंभीर रूप से प्रताड़ित किया गया और पीटा गया। इसके परिणामस्वरूप तीन साल जेल में बिताने के बाद वह बहुत बीमार हो गए। बाद के वर्षों में उन्हें समय पर उचित इलाज की सुविधा मुहैया नहीं कराई गई। साथ ही खान-पान और कपड़ों जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की कमी ने उनके खराब स्वास्थ्य को और खराब कर दिया, जिससे दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों की एक शृंखला बनती चली गई।

सूत्र ने आगे बताया कि अप्रैल 2018 में सजा पूरी करने के बाद वह जेल से छूट गए। लेकिन उनकी स्थिति इतनी गंभीर थी कि उन्हें अपना दैनंदिन कार्य करने या घर में घूमने में भी परिवार के सदस्यों की सहायता की आवश्यकता थी।'इसके अलावा, उन्हें अपने मठ में जाने और प्रमुख व्यक्तियों से मिलने पर रोक लगा दी गई थी। अधिकारियों द्वारा हर दिन उनके घर में घुसपैठ की जाती थी और उन्हें यह आदेश दिया जाता था कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना होती थीं।

उस समय उनके साथी भिक्षु और परिवार के सदस्य उनके स्वास्थ्य को लेकर गंभीर रूप से चिंतित थे। तदनुसार, ड्रैकगो मठ के डॉक्टरों ने जितना संभव हो सका,उनका इलाज किया। कुछ समय के लिए वह चोटों से कुछ हद तक उबर भी गए। लेकिन इस वर्ष की शुरुआत से बीमारी फिर से उभर आई। हालांकि,राजनीतिक दबाव के कारण उन्हें समुचित उपचार नहीं मिल सका। इस प्रकार, इस महीने की शुरुआत में जेल में लगी चोटों और घावों से उनकी मृत्यु हो गई।

शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर खूनी कार्रवाई

चीनी सरकार की भेदभावपूर्ण और दमनकारी नीतियों के खिलाफ ड्रैकगो काउंटी के भिक्षुओं और आम लोगों सहित तिब्बती निवासियों ने जनवरी 2012 में विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया था। निवासियों ने इन नीतियों का प्रतिवाद किया और इसके बजाय स्वतंत्रा और धार्मिक अधिकारों की मांग की। चीनी अधिकारियों ने अचानक भीड़ पर अंधाधुंध गोलीबारी करके विरोध मार्च को तितर-बितर कर दिया, जिसमें कई तिब्बती प्रदर्शनकारी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। उस कार्रवाई में मारे गए लोगों में योंटेन शामिल थे। इसमें कम से कम 40 अन्य गंभीर रूप से घायल भी हो गए थे।

गेशे टेंगा ने घटना के बाद मृतकों और घायलों के परिवारों के प्रति संवेदना जताई और उनका सहयोग भी किया था। इसके अलावा, उन्होंने पीड़ितों को मार्गदर्शन और उपचार सहायता प्रदान की। एकजुटता के संकेत के रूप में तावू (चीनी: दाओफू) सहित आस-पास के जिलों के तिब्बतियों ने ड्रैकगो में घायल हुए लोगों को सहायता दी और उनके प्रति संवेदना प्रकट की थी।

सच्चा तिब्बती देशभक्त

इस घटना के बाद ड्रैकगो मठ में बड़ी संख्या में तिब्बती एकत्र हुए,इस दौरान गेशे टेंगा ने उन्हें संबोधित किय। उनके भाषण का एक अंश इस प्रकार है:

'तिब्बत पर 1959 में चीनी आक्रमण के बाद से तिब्बत के सभी हिस्सों में शांतिपूर्ण प्रदर्शन हो रहा है। चीन की दमनकारी नीतियों और तिब्बती अधिकारों और स्वतंत्रता के उल्लंघन के परिणामस्वरूप ड्रैकगो में तिब्बतियों ने 2007 से लगातार विरोध प्रदर्शन किया है। क्योंकि चीनी दमनकारी नीतियों ने हमें अपनी भावनाओं और पीड़ा को और अधिक नियंत्रित करने में असमर्थ बना दिया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक अधिकारों के लिए तिब्बतियों के हताश और वास्तविक अनुरोधों को चीनी अधिकारियों द्वारा क्रूर प्रतिशोध से सहारे दबा दिया गया। ऐसा व्यवहार समझ से परे है। चीनी नेताओं को यह सब बताने या सूचित करने का कोई मतलब नहीं है। अपनी स्थिति और ताकत को बनाए रखने के लिए चीनी अधिकारियों ने 'मातृभूमि की रक्षा'और 'लोगों के कल्याण को सुरक्षित रखने'के नाम पर तिब्बती लोगों पर क्रूरता से प्रहार किया गया। हम ऐसे लोगों को नेता के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते हैं और न ही उन्हें अपनी सहमति दे सकते हैं।

'तिब्बती लोगों को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता को प्राप्त करने में भले ही खुद का बलिदान देना पड़े, लेकिन चीनी लोगों से कठोर चीनी नीतियों के बारे में बताने, उसका मुकाबला करने और चीनी नेताओं द्वारा चलाई जा रही दमनकारी सरकार को बेनकाब कर उसे गिराने का आग्रह करना महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक है कि चीनी नागरिक स्वतंत्रता और समानता का उपभोग करने के महत्व से पूरी तरह अवगत हों। चीनी लोगों को यह समझाने की जरूरत है कि अगर पूरा देश चीनी वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ खड़ा हो जाता है तो उन्हें बने रहने का कोई मौका नहीं मिलेगा।'

निम्नलिखित चार महत्वपूर्ण बिंदु हैं जिन पर हमें बोलना चाहिए: सबसे पहले, हम सभी को तिब्बतियों के अधिकारों और उनके कल्याण की रक्षा के लिए अपनी सामूहिक शक्ति जुटानी चाहिए। दूसरे कदम के रूप में हमें तिब्बत में धर्म और अभिव्यक्ति की आजादी के पक्ष में बोलना जारी रखनी चाहिए ताकि परम पावन दलाई लामा स्वदेश लौट सकें। दलाई लामा की स्वदेश वापसी की मांग हजारों तिब्बती लोगों की इच्छाओं और अनुरोध के अनुरूप है। तीसरा, हमें करुणा और शांति के साथ-साथ तिब्बती धर्म और संस्कृति को संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि सभी भव्य प्राणियों के लिए समग्र शांति और समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके। अंतिम लेकिन सबसे बाद का नहीं, हमें तिब्बत के मुद्दे पर दुनिया भर में लोगों और बुद्धिजीवियों का समर्थन जुटाने और जीतने के लिए सत्य और अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करना जारी रखना चाहिए।

उपरोक्त बातें न केवल अंतरराष्ट्रीय कानूनों और फैसलों के अनुसार हैं, बल्कि वे चीनी कानूनों और संविधान की भावना के भी अनुरूप हैं। इस तरह से, अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए हमारा संघर्ष गैरकानूनी और अनुचित होने के बजाय साहस और गर्व से परिपूर्ण है। इसलिए, हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमेशा आगे बढ़ना चाहिए।

इसी भाषण के कारण चीनी अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया था।

गेशे तेनज़िन पेलसांग का जन्म कर्ज़े प्रीफेक्चर के ड्रैकगो काउंटी अंतर्गत नोरपा गांव में 1965 में हुआ था। बचपन में उन्होंने स्थानीय मठ में तिब्बती बौद्ध धर्म का अध्ययन किया।

उन्होंने 1986 में दक्षिण भारत में डेपुंग लोसेलिंग मठ में बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। गेशे की डिग्री (तिब्बती बौद्ध धर्म में डॉक्टरेट) के साथ स्नातक होने परवे तिब्बत लौट आए थे।

❖ तिब्बती न्गाबा कीर्ति मठ के भिक्षु को ढाई साल की जेल की सजा

tibet.net, 30नवंबर, 2022

धर्मशाला। एक विश्वसनीय सूत्र के अनुसार, अक्तूबर 2022की शुरुआत में चीनी अधिकारियों द्वारा न्गाबा (चीनी: अबा) स्थित कीर्ति मठ के एक तिब्बती भिक्षु लोबसांग चोफेल को ढाई साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।

सूत्र के अनुसार, चीनी अधिकारियों ने उन्हें इस साल की गर्मियों में गिरफ्तार किया और अक्तूबर में सजा सुनाए जाने तक उन्हें हिरासत में रखा। सूत्र का कहना है कि इस समय उनकी गिरफ्तारी का कारण, उनका वर्तमान ठिकाना और हाल-चाल अज्ञात है।

2011 में लोबसांग चोफेल को 'देशभक्तिपूर्ण शिक्षा अभियान' या 'कानूनी शिक्षा' का विरोध करने के कारण गिरफ्तार किया गया था।केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने बताया कि चीनी अधिकारियों ने मठ में सामान्य धार्मिक गतिविधियों पर अनिश्चितकालीन प्रतिबंध के साथ-साथ भिक्षुओं को कानूनी शिक्षा ग्रहण करने के लिए मजबूर किया हुआ है। देशभक्ति शिक्षा सत्र के एक भाग के रूप में तिब्बतियों को परम पावन दलाई लामा की निंदा करने के लिए

मजबूर किया जाता है।

लोबसांग चोफेल पारंपरिक अम्दो प्रांत के न्गाबा (च: आबा) तिब्बती स्वायत्त प्रीफेक्चर में चाखोग चुक्लेगैप के रहने वाले हैं। उनके माता-पिता गत्से और नेकी हैं और बचपन से ही वे कीर्ति मठ में एक भिक्षु के रूप में रहे हैं। उनके छोटे भाई लोबसांग, जो कीर्ति मठ के एक भिक्षु थे, पहले ही चीनी पुलिस ने कैद कर लिया था।

❖ सांसद धोंडुप ताशी की गंगटोक की आधिकारिक यात्रा सम्पन

tibet.net, 02 नवंबर, 2022

गंगटोक। पूर्वोत्तर भारत में तिब्बती संसदीय यात्रा के दौरान सांसद धोंडुप ताशी ने 27 अक्तूबर से 01 नवंबर 2022 तक गंगटोक और गंगटोक तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय के न्यायाधिकार क्षेत्र के तहत आने वाले क्षेत्रों की अपनी आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की। अपनी यात्रा के दौरानसांसद धोंडुप ताशी ने वहां से राज्यसभा के सांसद श्री हिशे लाचुंगपा और सिक्किम विधानसभा के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार उप्रेती से शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने तिब्बती निवासियों, सरकारी अधिकारियों और तिब्बत समर्थकों से भी मुलाकात

की।

28 अक्तूबर 2022 को गंगटोक पहुंचने परसांसद धोंडुप ताशी का गंगटोक तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी लखपा छेरिंग के नेतृत्व में टीएसओ के स्टाफ सदस्यों, स्थानीय तिब्बती विधानसभा के अध्यक्ष जिनपा और सदस्यों, उत्संग के अध्यक्ष, डोटो और डोमी संघों के अध्यक्षों, क्षेत्रीय तिब्बती महिला एसोसिएशन की अध्यक्ष और तिब्बती युवा कांग्रेस के अध्यक्ष ने अगवानी की। अगले दो दिनों तक सांसदों ने उत्तरी सिक्किम में लाचेन और लाचुंग के साथ ही तिब्बत की सीमा से लगे पूर्वी सिक्किम के पहाड़ी दर्रे नाथू-ला का दौरा किया और वहां रह रहे तिब्बतियों से मुलाकात की।

30 अक्तूबर को सांसद ने राज्यसभा के सदस्य श्री हिशे लाचुंगपा से शिष्टाचार मुलाकात की और सिक्किम में रहने वाले तिब्बतियों को राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने सांसद को आठवें विश्व सांसद सम्मेलन में तिब्बत को लेकर अपनाई गई वाशिंगटन घोषणा से अवगत कराया और परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न प्रदान करने की मांग में उनके योगदान का आग्रह किया। श्री लाचुंगपा ने बताया कि परम पावन दलाई लामा को तिब्बती लोगों के साथ ही सिक्किम के लोग भी समान रूप से सर्वोच्च श्रद्धा के साथ पूजते हैं। सांसद लाचुंगपा ने बताया कि वह खुद परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न दिलाने के लिए विशेष रूप से कड़ी मेहनत कर रहे हैं और तब तक करते रहेंगे जब तक कि उन्हें भारत रत्न से सम्मानित नहीं किया जाता है। सांसद ने आगे उल्लेख किया कि उन्होंने गंगटोक में परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन समारोह सहित कई तिब्बती समारोहों में भाग लिया है और तिब्बती समुदाय द्वारा ऐसे अवसरों में भाग लेने के महत्व पर बात की है ।

सांसद धोंडुप ताशी ने 31 अक्तूबर को गुरु कुबुम लखांग, रुमटेक मठ, सुरमंग मठ और सेरा जे मठ का सिलसिलेवार दौरा किया।इसके बाद भारत तिब्बत सहयोग मंच के अध्यक्ष डॉ. एल.पी. शर्मा से मुलाकात की। अपनी बैठक के दौरान उन्होंने भारतीयों और तिब्बतियों के बीच दोस्ती को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। उस शाम बाद में सांसद ने गंगटोक के चोएक-सुम हॉल में एक सार्वजनिक वार्ता की, जहाँ उन्होंने तिब्बत के मुद्दे की स्थिति, 17वें टीपीआईई के चौथे सत्र के एजेंडे, सीटीए की नीति और परम पावन दलाई लामा की महान उपलब्धियों पर बात की। उन्होंने भाषा, संस्कृति और विरासत को संरक्षित करके विशिष्ट तिब्बती पहचान की रक्षा के महत्व को दोहराया। गंगटोक के छह तिब्बती संगठनों/संघों, उत्संग संघ, डोटो संघ, डोमी संघ, क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ, क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस और क्षेत्रीय तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन ने सांसद के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया।

01 नवंबर को सांसद ने शाक्य एनगोर मठ का दौरा किया और सिक्किम विधानसभा के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार उप्रेती से शिष्टाचार मुलाकात की। सांसद ने उसी दिन उपायुक्त रागुल के. आईएएस के साथ भी बैठक की। सांसद ने नामग्याल इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी, मेन-त्सी-खांग शाखा, गंगटोक तिब्बती सेंटलमेंट कार्यालय, स्वास्थ्य देखभाल केंद्रऔर अन्य केंद्रों के दौरे के साथ गंगटोक की अपनी आधिकारिक यात्रा का समापन किया।

सांसद दक्षिण सिक्किम में रावंगला तिब्बती बस्ती के दौरे से अपनी आधिकारिक सिक्किम यात्रा जारी रखेंगे।

❖ अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों का सातवां सम्मेलन दिल्ली में आयोजित

tibet.net, 28 नवंबर, 2022

नई दिल्ली। दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों के सातवें सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने 28 नवंबर, 2022 की सुबह कहा कि, 'तिब्बती मुद्दे का सक्रिय रूप से समर्थन करने और चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए भारत सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय का हस्तक्षेप और इरादा महत्वपूर्ण है।

दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथियों में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आनंद कुमार, माननीय संसद सदस्य और तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी)के संयोजक श्री सुजीत कुमार,भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक श्री रिनचेन खांडू खिरमे शामिल रहे।

चीन द्वारा तिब्बत में स्वायत्तता शासन के अपने मनगढ़ंत प्रचारों से अंतरराष्ट्रीय समुदाय को वशीभूत करने के कुत्सित प्रयासों के बारे में टिप्पणी करते हुए सिक्योंग ने कहा, यदि विश्व बिरादरी को तिब्बत मुद्दे को हल करना है तो इससे 'तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति के लिए वैध मान्यता की मांग करना' सीटीए के

लिए और अधिक प्रासंगिक हो गया है। लंबे समय से चले आ रहे चीन-तिब्बत संघर्ष के बीच ऐतिहासिक आख्यान को विश्लेषणात्मक रूप से समझने के लिए उन्होंने प्रोफेसर होन-शियांग लाओ की लिखित सामग्री के साथ माइकल वान वॉल्ट वान प्राग द्वारा तिब्बत ब्रीफ 20/20 पढ़ने का सुझाव दिया, जिनमें

तिब्बत के कानूनी रूप से चीन का हिस्सा होने का खंडन करने के लिए इन लेखकों के दशक लंबे व्यापक शोध और शाही रिकॉर्ड के ज्ञान दोनों से पर्याप्त मात्रा में तथ्यात्मक सामग्री मौजूद है। ज्ञात है कि चीन तिब्बत पर अपने अधिपत्य की वैधता जताने के लिए लगातार प्रचारित करता रहा है।

यद्यपि भारत ने 2010 के बाद से तिब्बत को चीन के हिस्से के रूप में मानना बंद कर दिया है, लेकिन तिब्बत पर इसका रुख पिछले कुछ वर्षों में शक्तिशाली लोकतांत्रिक देश- अमेरिका की तुलना में एक निष्क्रिय समर्थक के रूप में ही रह गया है। अमेरिका ने पिछले दिनों तिब्बत पर कई कानूनों को पारित किया है। पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण रूप सेअमेरिकी कांग्रेस ने 'तिब्बत रेसिप्रोकल एक्सेस बिल (तिब्बत में पारस्परिक पहुंच विधेयक), तिब्बत पॉलिसी एंड सपोर्ट बिल (तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम) और नवीनतम विधेयक पारित किए हैं,जिनमें तिब्बत की अनसुलझी स्थिति आदि को मान्यता दी गई है। जबकि भारत में अमेरिका जैसा तिब्बत विधेयक का संस्करण आने की संभावना निश्चित रूप से बहुत सीमित है, जिसे सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि चीन के साथ भारत की द्विपक्षीय संवेदनशीलता को तिब्बती प्रशासन अच्छी तरह से समझता है।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कहा,'हम समझते हैं और इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि हमारी उम्मीदें वास्तविकता पर आधारित रहें और हम भारत सरकार से नहीं चाहेंगे कि वह तिब्बत के राष्ट्रीय हित का समर्थन करने के लिए किसी भी तरह से अपने राष्ट्रीय हितों को खतरे में डाल ले। हमें जो भी समर्थन प्रदान किया जाता है, हम उसका स्वागत करते हुए खुद को सम्मानित महसूस करते हैं।'इसके अतिरिक्त, उन्होंने चीन का मुकाबला करने और बीजिंग में सकारात्मक परिवर्तन लाने के अभियान के बीच तिब्बत को केवल चीन का शिकार मानने के बजाय उसकी आंतरिक शक्ति के तौर पर तिब्बत को मान्यता देने की महत्वपूर्ण अपील की।

सिक्योंग ने भारत की केंद्र और राज्य सरकारों को उनके निरंतर समर्थन और एकजुटता के लिए धन्यवाद देकर अपना संबोधन समाप्त किया। उन्होंने सांसद सुजीत कुमार के नेतृत्व में ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज द्वारा तिब्बती मुद्दे को आगे बढ़ाने में योगदान के लिए भी सराहना की।

सांसद सुजीत कुमार ने अपने संबोधन में चीन का मुकाबला करने के लिए भारत द्वारा साहसिक कदम उठाने का आह्वान दोहराया और साथी सांसदों से तिब्बती आंदोलन को आगे बढ़ाने में सहयोग का अनुरोध किया। संसद के सदस्य और तिब्बत के लिए संसदीय समूह के संयोजक होने के नाते उन्होंने कहा कि जब भी वे तिब्बत पर एक विधेयक पेश करते हैं तो सदन में उनका कार्यकलाप अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है। उन्होंने उस समय को याद किया जब उनसे चीन के साथ द्विपक्षीय संबंधों और राष्ट्रीय हित के कारण विधेयक को वापस लेने का आग्रह किया गया था।

उन्होंने तिब्बत को चीन का आंतरिक मसला मानने की निंदा की। इसके बजाय, उन्होंने तिब्बत ब्रीफ 20/20 में माइकल वान प्राग द्वारा दिए गए तथ्यात्मक सबूतों की पुष्टि करने का आग्रह किया ताकि अंतरराष्ट्रीय समुदायों को तिब्बत को एक संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता देने और कभी भी चीन का हिस्सा न मानने के लिए राजी किया जा सके।

उन्होंने परम पावन दलाई लामा के मानवता के प्रति वृहत्तर योगदान के प्रतिदान स्वरुप केंद्र सरकार से भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग करने के अपने मंच के प्रयासों के बारे में सभा को अवगत कराया। सांसद सुजीत कुमार ने कहा, 'भारत परम पावन दलाई लामा को सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित करेगा।'उन्होंने कहा कि इस पुरस्कार के लिए परम पावन दलाई लामा समकालीन भारत में सबसे योग्य व्यक्ति हैं और उन्होंने इस बहुप्रतीक्षित पुरस्कार दिलाने की दिशा में अपने मंच की ओर से दृढ़ता से प्रयास जारी रखने का आश्वासन दिया।

मंच द्वारा घोषित एक और प्रयास है कि परम पावन को उनसे सहमति और समय लेकर भारतीय संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया जाए। फोरम के कई महत्वाकांक्षी लक्ष्यों में तिब्बत के वैध प्रतिनिधि के रूप में सीटीए को मान्यता देने के लिए भारत सरकार से आग्रह करना भी शामिल है।

आईटीएफएस के अध्यक्ष डॉ आनंद कुमार ने तिब्बती आंदोलन को मजबूत करने के लिए समन्वित प्रयास का आह्वान किया। उन्होंने आईटीएफएसकी स्थापना के दौरान आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया,जब कोई भी संसद सदस्य तिब्बती मुद्दे में शामिल होने या समर्थन करने के लिए तैयार नहीं था। उन्होंने कहा कि अनेक कठिनाइयों के बावजूद, 'आईटीएफएस तिब्बती मुद्दे के साथ खड़ा रहा है और आगे भी भाईचारे की भावना के साथ खड़ा रहेगा।'

उन्होंने प्रत्येक प्रतिभागी से,जहां भी अवसर और मंच मिले,तिब्बती समस्या के मुद्दे को उठाने और ठोस कार्रवाई करने के लिए सरकार पर दबाव डालने का आग्रह किया। वर्तमान सरकार का जो समय बचा है उसमें उन्होंने संसदीय समर्थक समूह के सदस्यों से सदन में अधिक से अधिक तिब्बत मुद्दे पर बोलने और तिब्बत आंदोलन का समर्थन करने वाला श्वेत पत्र जारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस तरह के रणनीतिक कदम की चीन द्वारा निंदा किए जाने की आशंका के बारे में डॉ आनंद ने कहा कि भारत को तिब्बत और उसके उचित कारण के लिए सक्रिय रूप से खड़ा रहना चाहिए।

सांसद सुजीत कुमार की चीन से निपटने में भारत सरकार द्वारा साहसिक कार्रवाई के आह्वान के विपरीतश्री इंद्रेश कुमार ने भारत-चीन संबंधों की पारस्परिक संवेदनशीलता और भेद्यता को देखते हुए चीन से निपटने के लिए एक उदार दृष्टिकोण का सुझाव दिया। हालांकि, उन्होंने चीन में सबसे पहले शुरू हुए कोरोना-वायरस से खराब तरीके से निपटने के लिए चीन की कड़ी आलोचना की और लगभग 80लाख लोगों की हत्या के लिए चीन को जिम्मेदार ठहराया। परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न से सम्मानित करने के संबंध में उन्होंने कहा कि वे अलग-अलग विचारों और रचनात्मक बहस का स्वागत करते हैं।

हालांकि, जब उन्होंने तिब्बत की संप्रभुता और सीटीए के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के निर्विवाद समर्थन का आश्वासन दिया, तो उनका मानना था कि सरकार को तिब्बत पर किसी भी नीति का मसौदा तैयार करने से पहले समग्र रूप से सोचना चाहिए और कोई आवेगी, भावनात्मक निर्णय नहीं लेना चाहिए।

उन्होंने कहा,हम किसी भी ताकत को भारत की संप्रभुता और भारत के मित्र लोगों की संप्रभुता को नष्ट करने के लिए बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम तिब्बत का समर्थन करने के अपने संकल्प को तब तक जारी रखेंगे जब तक कि चीन-तिब्बत विवाद का समाधान नहीं हो जाता।'

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया द्वारा आयोजित और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय फोरम में भारत से 200 से अधिक प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इस दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरानप्रतिभागी 14वें दलाई लामा के पुनर्जन्म, तिब्बत में तिब्बतियों के अधिकार और स्वतंत्रता, निचले इलाके के देशों के लिए तिब्बत की पारिस्थितिकी के महत्व पर ध्यान देने के साथ चीन-तिब्बत संघर्ष में भारत की भूमिका पर विचार-विमर्श करेंगे और भारत में तिब्बत समर्थक समूहों को मजबूत करने के लिए रणनीति तैयार करने के साथ एक घोषणा और कार्य योजना को अपनाने का काम भी होगा।

❖ तिब्बत समर्थन समूहों ने सीटीए को दुनिया भर में बसे तिब्बतियों के वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दी

tibet.net, 30नवंबर, 2022

नई दिल्ली। दिल्ली में आयोजित तिब्बत समर्थक समूहों के दो दिवसीय अखिल भारतीय सातवें सम्मेलन में 29 नवंबर, 2022को अमेरिकी कांग्रेस द्वारा पारित तिब्बत पॉलिसी एंड सपोर्ट बिल (तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम)- 2020के अनुसरण में कई अहम घोषणाएं की गईं। इसके साथ ही सम्मेलन का समापन हो गया। आज अपनाई गई घोषणाएँ भारत सरकार को तिब्बत पर स्पष्ट नीतियों को अपनाने के लिए प्रेरित करने में रोडमैप के रूप में कार्य करने वाली हैं।

प्रतिनिधियों की कुछ महत्वपूर्ण मांगों में भारत सरकार द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन को दुनिया भर में तिब्बतियों के वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देने की मांग शामिल है, जबकि चीन-तिब्बत संघर्ष को स्थायी तौर पर हल करने में सीटीए के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का पूर्ण समर्थन किया गया है। इसके अलावा, प्रतिनिधियों ने तिब्बती तुल्कुओं के पुनर्जन्म में चीन के हस्तक्षेप की निंदा की और तिब्बती लोगों की राष्ट्रीय पहचान की रक्षा के लिए अधिक राजनीतिक भागीदारी या समर्थन का आह्वान किया।

दो दिवसीय सम्मेलन के समापन सत्र के मुख्य वक्ताओं में निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेनपो सोनम तेनफेल, डॉ. नीरजा माधव, प्रसिद्ध लेखक और तिब्बत के मित्र और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपतिडॉ. के.सी. अग्निहोत्री और डीआईआईआर के सचिव कर्मा चोयिंग शामिल रहे।

तिब्बती संसद के अध्यक्ष ने तिब्बती आंदोलन की निरंतरता को सुनिश्चित करने के लिए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने पिछले 60से अधिक वर्षों में तिब्बतियों को भारत से मिल रहे पर्याप्त समर्थन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने हमारा हाथ तब पकड़ा जब हमें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। इसलिए हम भारत सरकार और उसके लोगों के ऋणी हैं।

हालांकि, तिब्बती मुद्दे को दुनिया भर में सरकारों और नीति निर्माताओं से पर्याप्त समर्थन मिल रहा है, फिर भी कई लोग तिब्बत समस्या को चीन के आंतरिक मामले के रूप में देखते हैं। अध्यक्ष ने चेतावनी दी कि तिब्बत पर चीन के दावे की वैधता को स्वीकार करना अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का उल्लंघन करना है। उन्होंने तिब्बत से परे अपने अधिनायकववादी शासन को फैलाने की चीन की क्षमता के बारे में भारत को आगाह किया, जिसे चीन ने भारत-तिब्बत सीमा में घुसपैठ और सैन्य टकराव के माध्यम से बार-बार प्रदर्शित किया है। उन्होंने इंगित किया कि जब तक तिब्बत का मुद्दा अनसुलझा रहेगा, चीन के साथ भारत का लंबे समय से चला आ रहा सीमा संघर्ष अनिर्णित रहेगा।

चीन-भारत के बीच के तनाव को हल करने में तिब्बत एक महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए भारत तिब्बत से बच नहीं सकता,क्योंकि तिब्बत चीन-भारतीय संघर्ष का प्रमुख कारक बना हुआ है। इसलिए, चीन के साथ भारत की स्थिरता और शांति के लिए तिब्बत के मुद्दे को हल करने की आवश्यकता है। स्पीकर ने वैश्विक वर्चस्व स्थापित करने की चीन की भूख और व्यापक लक्ष्यों की उसकी खोज के खतरे को भी रेखांकित किया और चीन का मुकाबला करने के लिए भारत और पड़ोसी एशियाई देशों से एक बहुपक्षीय गठबंधन बनाने का आग्रह किया।

सचिव कर्मा चोयिंग ने तिब्बत और तिब्बती लोगों से संबंधित मुद्दों पर विस्तृत प्रकाश डाला। विशेष रूप से तिब्बत के जलवायु परिवर्तन की भू-राजनीति, इसकी सीमा पार की नदियों और चीनी सरकार द्वारा वहां बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक संहार पर प्रकाश डाला।

दस प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल होने के नाते तिब्बत भारत और चीन सहित दक्षिण और दक्षिण- पूर्व एशिया में लगभग दो अरब लोगों की जीवन रेखा है। हालांकि, तापमान में वैश्विक वृद्धि के कारण तिब्बती पठार पर पिछले एक दशक में तापमान में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। तिब्बत के अंदर बिगड़ती पर्यावरणीय स्थिति को रेखांकित करते हुए सचिव चोयिंग ने 'विकास' की आड़ में तिब्बती पठार की पारिस्थितिकी को अंधाधुंध रूप से नष्ट करने के खिलाफ चीन को चेतावनी देने के लिए वैश्विक स्तर से पहल करने का आग्रह किया। उन्होंने भारत को तिब्बत की पारिस्थितिकी के कायाकल्प और पुनरोद्धार पर पर्याप्त ध्यान देने और चीन को लेकर बनाई जानेवाली अपनी नीतियों में इस चिंता को प्राथमिकता देने के लिए आगाह किया।

डीआईआईआर के सचिव ने कहा, 'पारिस्थितिकी अपने आप में एक राजनीतिक विषय नहीं है, फिर भी जब हम पारिस्थितिकीय गड़बड़ी के कारण अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय चुनौतियों का सामना करते हैं तो यह राजनीतिक संवाद का एक अभिन्न विषय बन जाता है।'चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जे का विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि तिब्बत में चीन का आना एक गंभीर पारिस्थितिकीय आपदा के समान था। उन्होंने अपने बयान में तिब्बत की पारिस्थितिकी की वास्तविकता को प्रस्तुत करते हुए कई साक्ष्य तथ्य भी रखे। इनमें विस्तार से बताया गया है कि पीआरसी के कब्जे के बाद से तिब्बत की पारिस्थितिकी कैसे बिगड़ गई है। उन्होंने तिब्बत के उन सीमावर्ती देशों के साथ चीन द्वारा पैदा किए गए भू-राजनीतिक तनाव के बारे में बात की, जो कभी शांति का और विसैन्यीकृत क्षेत्र हुआ करता था।

पारिस्थितिकीय चिंताओं के अलावा सचिव चोयिंग ने तिब्बत में चीन की दमनकारी नीतियों के कारण अस्तित्व के खतरे पर सभा का ध्यान आकृष्ट

किया, जो तिब्बती भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय पहचान के विनाश के माध्यम से परिलक्षित होता है। और हाल ही मेंऔपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों का प्रचलन, बड़े पैमाने पर डीएनए नमूने एकत्र करने का पूरजोर अभियान आदि तिब्बती लोगों के मौलिक मानवाधिकारों के अत्यधिक उल्लंघन के कुछ उदाहरण हैं।

सचिव चोयिंग ने जोर देकर कहा,'तिब्बत के अंदर तिब्बती लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के बजायचीन तिब्बत पर अपने नाजायज शासन की वैधता को हासिल करने की साम्राज्यवादी मानसिकता से ग्रस्त है।'उन्होंने कहा कि अब तिब्बतियों के लिए भारत के साथ अपनी दोस्ती और उसके बाद में तिब्बत की सच्चाई के लिए समर्थन हासिल करने और तिब्बती लोगों को चीन के लौह जकड़न से मुक्ति दिलाने के लिए उसे अपने अहिंसक संघर्ष को जारी रखने के लिए आश्वस्त करने की जरूरत है।

डॉ. के.सी. अग्निहोत्री ने चीन द्वारा तिब्बत के कब्जे को भारत के इतिहास में सबसे खेदजनक दिनों में से एक के रूप में याद किया। उनका मानना है कि इस स्थिति को टाला जा सकता था यदि भारत ने लापरवाही नहीं की होती। उन्होंने कहा कि यह लापरवाही चाहे चीन से डर के कारण हो या चीनी सरकार को खुश करने लिए, लेकिन चीन को तिब्बत पर कब्जा करने देना भारत की एक गंभीर गलती थी। भारत की विफलता के कारण, भारत-तिब्बत सीमा पर चीन की सैन्य घुसपैठ से लगातार डर पैदा हो रहा है। उन्होंने तिब्बत पर आक्रमण से पहले सीमा पर शांति के दिनों को याद करते हुए कहा कि अब निस्संदेह भारत इसकी कीमत चुका रहा है।

पूर्व कुलपति ने कहा, 'जब तिब्बत पर कब्जा नहीं किया गया था, तब भारत को किसी भी प्रकार की सुरक्षा चिंता नहीं थी और न ही तिब्बत के साथ अपनी सीमा की रक्षा करने की चुनौती थी। लेकिन यह आज एक बड़ा विरोधाभास है, क्योंकि सीमा सुरक्षा पर भारत द्वारा बड़ी मात्रा में धन और संसाधन खर्च किए जा रहे हैं।'

उन्होंने कहा कि भारत और भारत जैसे देशों और कई अन्य देशों की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय पहचान सीधे तौर पर जमीन से जुड़ी हुई है। हालांकि उन्होंने दोहराया कि,तिब्बती लोगों के मामले अलग तरह के हैं। इसके लिए उन्होंने परम पावन दलाई लामा से जुड़ी उनकी राष्ट्रीय अस्मिता की ओर इशारा किया। इस वजह सेजब तिब्बत पर चीनी सैन्य आक्रमण जोर पकड़ने लगा तो तिब्बती लोगों की तत्काल चिंता परम पावन की सुरक्षा थी। पूर्व कुलपति ने कहा कि, ऐसा इसलिए कि जब तक तिब्बती परम पावन दलाई लामा से भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से जुड़े हुए हैं, 'तिब्बतियों की राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने का चीन का प्रयास व्यर्थ है।'

डॉ नीरजा माधव ने कहा कि कैसे तिब्बती मुद्दे के साथ उनकी भागीदारी गेशे जम्पा के माध्यम से जुड़ी। उनका पहला लेखन भारत में रहने वाले तिब्बती शरणार्थियों की समस्या पर है, जिसमें उनका सामाजिक और राजनीतिक गुस्सा भी शामिल है। तब से, उसने तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए लेखन में अपने कौशल का उपयोग एक माध्यम के रूप में करने का फैसला किया है। डॉ नीरजा माधव ने अपनी लिखित सामग्री के माध्यम से लगातार भारत सरकार से तिब्बत में सांस्कृतिक संहार पर अपनी चुप्पी तोड़ने और तिब्बती लोगों के मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ बोलने का आग्रह किया है।

❖ भारत-तिब्बत मैत्री संघ का नवमां राष्ट्रीय सम्मेलन बिहार के राजगीर में सम्पन

tibet.net, 03 नवंबर, 2022

राजगीर।भारत के सबसे पुराने तिब्बत समर्थक समूहों में से एक भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) का दो दिवसीय नवमां राष्ट्रीय सम्मेलन 31 अक्टूबर से 01 नवंबर 2022 तक बिहार राज्य के पवित्र शहर राजगीर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का विषय, 'तिब्बत की आजादी, भारत की की सुरक्षा'रखा गया औरभारत-तिब्बत मित्रता और तिब्बत की स्वतंत्रता के बारे में सम्मेलन में चर्चा की गई।

दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन परम पवित्र प्रो. समदोंग रिनपोछे (पूर्व कालोन त्रिपा, केंद्रीय तिब्बती

प्रशासन और आईटीएफएस के संरक्षक) ने सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग की कालोन नोर्जिन डोल्मा और बिहार सरकार के प्रतिनिधि डॉ. नरेंद्र पाठक के साथ किया। सम्मेलन में स्वामी बसवा मदारा चेन्नईयाह और डॉ आनंद कुमार समेत देश भर से 150 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

डॉ. आनंद कुमार ने अपने परिचयात्मक भाषण में सत्य और न्याय के साथ खड़े होने के लिए भारत-तिब्बत मैत्री संघ की सराहना की और कहा कि तिब्बती मुद्दे का समर्थन करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सम्मेलन स्थल के लिए चयनित नालंदा परंपरा की भूमि के रूप में राजगीर के महत्व को भी साझा किया, जिससे तिब्बत का आध्यात्मिक संबंध जुड़ा है।

कालोन नोर्जिन डोल्मा ने अपने संबोधन में तिब्बती मुद्दे पर विचार-विमर्श करने वाले सम्मेलन के आयोजन के लिए भारत-तिब्बत मैत्री संघ की सराहना की। उन्होंने पिछले छह दशकों से तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए उनके योगदान सहित तिब्बतियों को लगातार समर्थन और सहायता देने के लिए भारत की सरकारों और लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने तिब्बत के

महान मुद्दे के लिए स्थानीय स्तर पर समर्थन, क्षमता निर्माण और तिब्बत समर्थक समूहों के सशक्तिकरण के महत्व पर जोर देते हुए तिब्बत के संबंध में वर्तमान घटनाक्रम और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा दुनिया भर में तिब्बती मुद्दों के लिए समर्थन और वकालत करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर प्रकाश डाला।

आईटीएफएस को तिब्बती मुद्दे के लिए काम करने वाले सबसे पुराने संगठनों में से एक के रूप में देखते हुए प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे ने उनकी नैतिकता और सेवाओं की सराहना की। उन्होंने सार्वभौमिक जिम्मेदारी के तौर पर 'प्राचीन भारतीय ज्ञान को पुनर्जीवित' करने की अनिवार्य आवश्यकता पर बल दिया।

रिनपोछे ने कहा,'तिब्बत का मुद्दा किसी छोटे से देश का मुद्दा नहीं है, बल्कि मानवता का मुद्दा है। गौतम बुद्ध का मित्रता और करुणा का संदेश ही तिब्बत मुद्दे का एकमात्र समाधान है। तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के मार्ग की आवश्यकता है।'

सभा में ही प्रोफेसर समदोंग रिनपोछे का जन्मदिन अग्रिम रूप से मनाया गया। उन्हें आईटीएफएस के संरक्षक और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक माना जाता है।

इस मौके पर बिहार सरकार के प्रतिनिधि डॉ नरेंद्र पाठक ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का संदेश पढ़ा।

दूसरे दिन के सम्मेलन की अध्यक्षता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और बिहार सरकार में ग्रामीण विकास एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री श्रवण कुमार ने की।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अपने मुख्य भाषण में समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण से लेकर मधु लिमये द्वारा तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच के गठन तक भारत-तिब्बत मित्रता की पृष्ठभूमि को याद किया। इस मंच का आगे नेतृत्व जॉर्ज फर्नांडीस ने किया। सिक्योंग ने सभा से तिब्बत के अंदर की विकट स्थिति की गहरी समझ के लिए 1984 में जॉर्ज ऑरवेल द्वारा लिखी गई एक पुस्तक का गहन अध्ययन करने की सिफारिश की। उन्होंने प्रतिनिधियों को अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत तिब्बत की कानूनी स्थिति और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत के लिए अपनी निरंतर एडवोकेसी के बारे में जानकारी दी।

मंत्री श्रवण कुमार ने तिब्बत के लिए अपने समर्थन का आश्वासन दिया और इस मुद्दे को समर्थन देनेवाले डॉ. राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, मधु लिमये, जॉर्ज फर्नांडीस और अन्य समाजवादी नेताओं के नक्शेकदम पर चलने का आश्वासन दिया।

तिब्बत के विशेषज्ञ और समर्थक डॉ. विजय क्रांति ने तिब्बत पर एक ऑनलाइन प्रस्तुति दी, जिसमें तिब्बत की वर्तमान स्थिति और तिब्बत के संबंध में हाल के घटनाक्रमों की तुलना में कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे पर प्रकाश डाला।

सम्मानित सदस्यों और प्रतिनिधियों के बीच भारत की तिब्बत नीति/हिमालयी नीति पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसमें से प्रत्येक ने अपने पक्ष प्रस्तुत किए।

केंद्रीय समिति, राज्य समिति और छात्र एवं महिला मंच की रिपोर्ट पर एक संगठनात्मक चर्चा हुई, जिसके बाद राज्यवार बैठक हुई।

सम्मेलन ने आईटीएफएस के संगठनात्मक पुनर्गठन और राजगीर घोषणा-पत्र और कार्य योजना को अपनाने का संकल्प लिया।

❖ टीपा के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से तिब्बत-लद्दाख के बीच सांस्कृतिक और राजनयिक संबंधों को बढ़ावा

tibet.net, 7 नवंबर, 2022

लद्दाख। तिब्बतन इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस (टीपा) के 26पेशेवर कलाकारों की एक सांस्कृतिक मंडली ने अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में लेह जिले का प्रशासन करनेवाली लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद नामक स्वायत्त जिला परिषदके निमंत्रण पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुत के लिए लद्दाख का दौरा किया।

कलाकारों ने 30 अक्तूबर को एनडीएस स्टेडियम में थिकसे रिनपोछे द्वारा स्थापित चैरिटी के लिए फंड जुटाने के कार्यक्रम में प्रस्तुति दी और कुछ दिनों बाद विशेष रूप से सरकारी अधिकारियों के लिए एक अन्य कार्यक्रम में अपनी कला का प्रदर्शन किया। इन कला- प्रदर्शनों को खूब सराहा गया और दर्शकों से तालियों की गड़गड़ाहट से इनका स्वागत किया। अधिकारिक समारोहों के दौरान इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आमंत्रण देने के लिए टीपा के निदेशक धोंडुब छेरिंग ने लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद के प्रति आभार प्रकट किया और मुख्य अतिथि और गणमान्य व्यक्तियों को टीपा का स्मृति चिन्ह भेंट किया।

लद्दाख में टीपा कलाकारों ने सीआरओ के अनुरोध परस्कूली बच्चों, कर्मचारियों और शिक्षकों के साथ-साथ तिब्बती और स्थानीय लोगों के लिए तिब्बती चिल्ड्रन्स विलेज स्कूल में कला का प्रदर्शन किया।

टीपा प्रतिनिधिमंडल का थिकसे रिनपोछे के साथ उनके मठ में भी दर्शकों के एक बड़े समूह ने स्वागत किया, जहां निदेशक ने रिनपोछे को दुनिया के महान योगी थंगटोंग ग्याल्पो की एक मूर्ति भेंट की। यह सभी भव्य प्राणियों की सेवा करने के उनके लंबे जीवन की सच्ची इच्छा और प्रार्थना के संकेत के रूप में थी। कलाकारों ने रिनपोछे और अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में 'न्गोनपेढोन'और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन किए। रिनपोछे ने तिब्बत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विशेष रूप से आचे ल्हामो ओपेरा परंपरा के महत्व और विशिष्टता पर प्रकाश डाला और कलाकारों को इस समृद्ध परंपरा को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

दौरे के अंतिम दिन, एलएडीएचसी द्वारा केंद्र शासित प्रदेश की सरकार के अधिकारियों के लिए विशेष रूप से एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें केंद्रशासित प्रदेश सरकार के माननीय उपराज्यपाल के सलाहकार श्री उमंग नरूला, अधिवक्ता श्री ताशी ग्यालसन, माननीय अध्यक्ष/ सीईसी, कार्यकारी पार्षद के साथ एलएडीएचसी और केंद्रशासित प्रदेश की सरकार के उच्च अधिकारी उपस्थित थे।

लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद ने टीपा कलाकारों द्वारा उनके सभी उत्कृष्ट कला प्रस्तुति और कला के माध्यम से समृद्ध तिब्बती सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए टीपा प्रतिनिधिमंडल के लिए ग्रैंड ड्रैगन होटल में विदाई डिनर पार्टी का आयोजन किया।

लद्दाख दौरे का सार-संक्षेप प्रस्तुत करते हुए धोंडुप छेरिंग ने कहा कि यह यात्रा-2014 के बाद पहली बार न केवल समान सांस्कृतिक विरासत को साझा करनेवाले लद्दाख के लोगों के लिए तिब्बती नृत्य और संगीत लाया, बल्कि तिब्बतियों और लद्दाख के लोगों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव और संबंधों को मजबूत करने में भी मदद करनेवाली साबित होगी।

❖ तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का चेक संसद में तिब्बत मुद्दे भाषण

tibet.net, 14 नवंबर, 2022

प्राग (चेक गणराज्य)।वर्तमान में यूरोप की आधिकारिक दौरे पर गए निर्वासित तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल के तीन सदस्यों- सांसद यूडन औकात्संग, तेनपा यारफेल और वांगड्यू दोरजी ने 14 नवंबर 2022 को चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जित्का सीटलोवा और जिरी ओबरफाल्जर द्वारा आयोजित

एक सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन का आयोजन चेक सीनेट में फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत ग्रुप, इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत, चेक सपोर्ट तिब्बत, सिनोप्सिस और यूरोपियन वैल्यू सेंटर फॉर सिक्योरिटी पॉलिसी के सहयोग से किया गया था। सम्मेलन में इस बात पर चर्चा हुई कि तिब्बत संकट को दूर करने के लिए चेक गणराज्य और यूरोपीय संघ क्या कर सकते हैं? और इसका संकल्प यूरोप के हित में क्यों है?

चेक गणराज्य की सीनेट में सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की शुरुआत चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जिरी ओबरफाल्जर के वक्तव्य से हुई। इसके बाद चेक सीनेट में तिब्बत समर्थन समूह के अध्यक्ष प्रीमिस्ल रबास और चेक गणराज्य के विदेश मामलों के उपमंत्री जिरी कोज़ाक ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद चेक गणराज्य के यूरोपीय मामलों के उपमंत्री मारेक हावरा और निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य यूडन औकात्सांग का संबोधन हुआ।

पहले सत्र में दलाई लामा और मध्य-पूर्वी यूरोप में सीटीए की प्रतिनिधि थिनले चुक्की के साथ तिब्बत की स्थिति पर चर्चा की गई।तिब्बत में मानवाधिकारों की स्थिति पर बोलते हुए निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य तेनपा यारफेल ने तिब्बत में धर्म की स्वतंत्रता और तिब्बती लामाओं के उत्तराधिकार पर अपना विचार रखा। इसके बाद अंत में अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रोफेसर माइकल वैन वॉल्ट वान प्राग ने तिब्बत की स्थिति और चीन-तिब्बती संघर्ष को हल करने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की जिम्मेदारी पर अपनी बात रखी।

दूसरे सत्र में तिब्बती संकट का समाधान करने के लिए यूरोपीय संघ क्या कर सकता है? विषय पर बोलते हुए निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य यूडन औकात्संग ने बताया कि तिब्बत का समर्थन करना यूरोप के हित में क्यों है। इसके बादराज्य और चीन- यूरोपीय संघ संबंधों की संभावनाओं,यूक्रेन युद्ध,चीन और तिब्बत पर यूरोपीय संघ की विदेश नीति पर प्रभावऔर यूरोपीय विदेश कार्रवाई सेवा के नीति अधिकारी - चीन बालाज़ गार्ग्या,यूरोपियन वैल्यू सेंटर फॉर सिक्योरिटी पॉलिसी के विश्लेषक डेविड प्लासेक और यूरोपीय संसद के सदस्य इसाबेल सैंटोस ने यूरोपीयन संसद की भूमिका पर चर्चा की।

इसी तरह तीसरे सत्र में निर्वासित तिब्बतियों के साथ अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, सहयोग और साझेदारी की संभावनाओं पर चर्चा हुई। विदेशी मामलों की रक्षा और सुरक्षा पर सीनेट समिति के अध्यक्ष पावेल फिशर ने तिब्बती संकट को हल करने के विकल्पों की खोज,उदार लोकतंत्र की भूमिका आदि पर पर बात की। इसके बाद चैंबर ऑफ डेप्युटी के सदस्य ईवा डेक्रॉइक्स ने तिब्बत में मानवाधिकारों को आगे बढ़ाने और समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोग पर बात की। संयुक्त राष्ट्र एडवोकेसी टीम के प्रमुख और इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत- जर्मनी के कार्यकारी निदेशक काई मुलर ने'तिब्बत- चीन में मानवाधिकारों के लिए युद्ध का मैदान बना संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद' विषय पर अपनी बात रखी। अंत मेंद कंपेन फॉर हांगकांग के अध्यक्ष सैमुअल चू ने मानवाधिकारों और लोकतंत्र को आगे बढ़ाने के लिए हांगकांग और तिब्बत के सेतु और अवसर बनने पर बात की।

सम्मेलन का समापन इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत-यूरोप के कार्यकारी निदेशक वांग्पो तेथोंग, विदेश मामलों की समिति के सदस्य और चेक चैंबर ऑफ डेप्युटी के तिब्बत समर्थन समूह के अध्यक्ष हयातो जोसेफ ओकामुरा और चेक सीनेट के उपाध्यक्ष जित्का सीटलोवा के संबोधन के साथ हुआ।

❖ सांसद छेरिंग डोल्मा तवांग तीर्थ यात्रा के उद्घाटन में शामिल हुए

tibet.net, 20 नवंबर, 2022

गुवाहाटी।निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से सांसद छेरिंग डोल्मा ने 18 नवंबर 2022 को गुवाहाटी में भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा आयोजित 11वीं तवांग तीर्थ यात्रा के उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा आयोजित 11वीं तवांग तीर्थ यात्रा का उद्घाटन समारोह आरएसएस के वरिष्ठ नेता श्री इंद्रेश कुमार, सांसद छेरिंग डोल्मा, तेनजिंगांग के तिब्बती सेंटलमेंट अधिकारी तेनजिन रिनचेन, टीवाईसी अध्यक्ष गोंपो धुंडुप और अन्य की उपस्थिति में आयोजित किया गया था।

11वीं तवांग तीर्थ यात्रा के उद्घाटन समारोह में अपने संबोधन में सांसद छेरिंग डोल्मा ने

निर्वासन में तिब्बती संसद की ओर से सभी विशिष्ट अतिथियों और प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने पूरे भारत के उन सभी तिब्बत समर्थकों का आभार व्यक्त किया जो बीटीएसएम के नेतृत्व में तिब्बत के न्यायोचित मुद्दे का समर्थन करते रहे हैं। उन्होंने भारत से तिब्बत मुद्दे का समर्थन जारी रखने की भी अपील की।

सांसद ने इस इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत और उसके लोग तिब्बतियों के पीछे कैसे खड़े हुए और तिब्बत के मुद्दे पर अपना अटूट समर्थन दिया।सांसद ने उन तिब्बतियों के सामने आने वाली कठिनाइयों पर प्रकाश डाला, जो दमनकारी चीनी नीतियों, धार्मिक प्रतिबंध, भाषा और पर्यावरण विनाश और अन्य सहित तिब्बत में पीछे रह गए हैं। उन्होंने चीनी सरकार द्वारा उन पर थोपे गए अत्याचारों का विरोध करने के लिए तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के आत्मदाह और तिब्बत में 'शून्य कोविड नीति' के बारे में भी बात की।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा आयोजित 11वीं तवांग तीर्थ यात्रा को आरएसएसके वरिष्ठ नेता श्री इंद्रेश कुमार, सांसद त्सेरिंग डोलमा, बीटीएसएमके राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल और टीवाईसीअध्यक्ष ने 19 नवंबर 2022 को झंडी दिखाकर रवाना किया।

11वीं तवांग तीर्थ यात्रा गुवाहाटी से बोमडिला तक जाने वाली है। इस तरह की पहली यात्रा बीटीएसएम द्वारा 2012 में आयोजित की गई थी।

❖ 'फाइंडिंग द कॉमन ग्राउंड' बैठक ताइपे में आयोजित

tibet.net, 29 नवंबर, 2022

ताइपे (ताइवान)। ओओटी के एक प्रतिनिधि के नेतृत्व में तिब्बती संघों ने 27 नवंबर को ताइवानी संघों के साथ संयुक्त रूप से ताइपे में 'समान आधार की खोज' विषय पर एक बैठक आयोजित की। इस वर्ष का विषय था कि ताइवान और निर्वासित तिब्बती लोकतंत्र भविष्य में चीन को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

बैठक की अध्यक्षता मुख्य अतिथि लेखक लोब हेउ जॉन ने की। इसमें ओओटी प्रतिनिधि केलसांग ग्यालत्सेन बावा शामिल हुए और सम्मेलन के उद्देश्य और नियमों- विनियमों की जानकारी दी। तिब्बती संघों के अध्यक्ष ताशी छेरिंग, प्रोफेसर छिम चान योन ने सम्मेलन में उद्घाटन भाषण किया। पहला सत्र लोकतंत्र के प्रति जागरूकता और छह विशेषज्ञों के अनुभवों के आदान-प्रदान पर था। पहले वक्ता द सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क के प्रोफेसर मिंग शिया ने लोकतंत्र के प्रति जागरूकता, परम पावन दलाई लामा के दृष्टिकोण और निर्वासित तिब्बती लोकतंत्र के मुद्दे पर सभा को संबोधित किया।

राष्ट्रीय ताइवान विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर चू-चेंग मिंग ने ताइवान के हाल के क्षेत्रीय चुनाव परिणामों के बारे में बताया। यह चुनाव परिणाम भविष्य में चीन और ताइवान के बीच संबंधों, ताइवान के नीति-निर्माण और वैश्विक स्थिति को प्रभावित करेगा।

ताइवान के प्रतिनिधि ने तिब्बती लोकतंत्र के बारे में जानकारी दी, जिसे परम पावन दलाई लामा के निर्वासन में आने के बाद दुनिया भर में फैले तिब्बती समुदाय के बीच उनके विकास के दृष्टिकोण के अनुसार स्थापित किया गया था। उनके बाद जाने-माने रिपोर्टर और शोधकर्ता हरि पांग मिंग हू ने एक बाहरी पर्यवेक्षक के तौर पर ताइवान के लोकतंत्र पर बात की। हांगकांग के पूर्व लेजिस्लेटिव सदस्य और अब ताइवान के बस गए शू पेटिल ने हांगकांग के मुद्दे के बारे में बात की।

❖ मैक्सिको की कांग्रेस में 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' संसदीय समूह गठित

tibet.net, 09 नवंबर, 2022

मेक्सिको। डिप्टी सल्वाडोर कारो कैबरेरा की अध्यक्षता वाली मेक्सिको कांग्रेस (संसद) में मंगलवार 09 नवंबर, 2022 को 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत'गठित किया गया।
सत्र लेजिस्लेटिव समूह के सदस्यों के संबोधन के साथ शुरू हुआ।इसके बाद निदेशक मंडल की संरचना का प्रस्ताव और चुनाव हुआ। तिब्बत के लेजिस्लेटिव मित्रों के समूह की स्थापना हुई और काम की शुरुआत

हुई। तकनीकी सचिवालय प्रस्तुत किया गया और मतदान कराया गया। इसके बाद 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत'समूह की स्थापना की खुली घोषणा की गई।

लैटिन अमेरिका के तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग ने निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेनपो सोनम तेनफेल द्वारा भेजे गए पत्र और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़ा, जहां उन्होंने मैक्सिको की कांग्रेस में फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के गठन का स्वागत किया।

प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग ने अपने भाषण में तिब्बत में वर्तमान मानवाधिकारों की स्थिति और निर्वासित तिब्बती सरकार द्वारा प्रस्तावित मध्य-मार्ग दृष्टिकोण के बारे में प्रतिनिधियों को सूचित किया। उन्होंने मैक्सिको के उन लोगों को प्रेरित किया, जिन्होंने अतीत में बाहरी दबावों के बावजूद,जरूरतमंद लोगों की मदद और सुरक्षा करने का फैसला किया था।

इसके बाद, डेप्यूटी फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत ने डिप्टी सल्वाडोर कारो कैबरेरा की अध्यक्षता में एक प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित किया,जहां कासा तिब्बत मेक्सिको के अध्यक्ष और संस्थापक अतिथि अध्यक्ष मार्को एंटोनियो करम, अंतरराष्ट्रीय तिब्बत नेटवर्क के लैटिन अमेरिका के समन्वयक टेरेलुज फ्लोरेस, तिब्बत एमएक्स सपोर्ट ग्रुप के समन्वयक रेमुंडो ज़ाल्डिवर और तिब्बत एमएक्स के काउंसलर जेसुस ओलिवारेस भी उपस्थित थे। इस प्रेस कांफ्रेंस में डिप्टी सल्वाडोर कारो कैबरेरा ने औपचारिक रूप से मैक्सिको की कांग्रेस में फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के गठन की घोषणा की।

बाद में, मार्को एंटोनियो करम ने अपना संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने तिब्बती लोगों की समृद्ध संस्कृति, पर्यावरण और मानवाधिकारों के सम्मान के संरक्षण के महत्व के बारे में बात की। फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के सदस्यों ने समृद्ध तिब्बती संस्कृति के संरक्षण के पक्ष में काम करने के लिए खुशी और दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। तिब्बत के लिए सहायता समूहों के प्रतिनिधियों ने मैक्सिको की कांग्रेस में फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के गठन में शामिल होने पर खुशी और प्रशंसा व्यक्त की और दुनिया के लोगों के साथ दोस्ती की लंबी मैक्सिकन परंपरा को आगे बढ़ाने और शरण की परंपरा और उन सभी के लिए आश्रय जिन्हें मैक्सिकन सरकार के संरक्षण की आवश्यकता है,को आगे बढ़ाने को मान्यता दी। अंत में, औपचारिक कार्यक्रम का आधिकारिक समापन कार्यवृत्त पर हस्ताक्षर के साथ किया गया, जो फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के गठन का साक्ष्य बना।

प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग, मार्को एंटोनियो करम, टेरेलुज फ्लोरेस, रेमुंडो ज़ाल्डिवर और जीसस ओलिवारेस को चैंबर ऑफ डेप्युटी के सत्र हॉल में आमंत्रित किया गया, जहां वार्षिक बजट पर चर्चा की जा रही थीऔर जहां सभी 500 प्रतिनिधि उपस्थित थे। डिप्टी सल्वाडोर कारो कैबरेरा ने पूर्ण सत्र के सामने बोलते हुए प्रतिनिधियों को ज़ाल्डिवर ने फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के गठन की सूचना दी, जिसका तालियों से स्वागत किया गया। इसी तरह, प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष ने प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग, कासा तिब्बत मेक्सिको के अध्यक्ष मार्को एंटोनियो करम, इंटरनेशनल तिब्बत नेटवर्क -लैटिन अमेरिका के समन्वयक तेरेलुज फ्लोरेस और तिब्बत समर्थक समूह एमएक्स के समन्वयक रेमुंडो ज़ाल्डिवर की उपस्थिति का स्वागत किया।

प्लेनरी हॉल में डिप्टी सल्वाडोर कारो कैबरेरा ने जिग्मे छेरिंग को अपने साथी लेजिस्लेचर से मिलवाया, जहां प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग के साथ बातचीत के बाद अन्य प्रतिनिधि फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत समूह में शामिल हो गए। इस तरह इसमें कुल 19 प्रतिनिधि हो गए, जिन्होंने फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप का गठन किया है।

इसके बाद डिप्टी कारो कैबरेरा के निमंत्रण पर जिग्मे छेरिंग, मार्को एंटोनियो करम, तेरे लूज फ्लोरेसऔर रेमुंडो ज़ाल्डिवर ने लेजिस्लेटिव परिसर का दौरा किया, जहां उन्हें कांग्रेस के इतिहास और चैंबर में प्रदर्शित भित्ति चित्रों और प्रतीकों के अर्थ के बारे में बताया गया।

❖ 11वें तिब्बत लॉबी दिवस पर ऑस्ट्रेलियाई सांसदों से परम पावन 14वें दलाई लामा के उत्तराधिकार की रक्षा के लिए नीति बनाने का आग्रह

tibet.net, 01 नवंबर, 2022

ऑस्ट्रेलिया। ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद (काउंसिल) के तिब्बत लॉबी

दिवस के 11वें दौर का आयोजन आज 01 नवंबर, 2022 को किया गया।परिषद की ओर से ऑस्ट्रेलियाई सरकार से आग्रह किया गया कि चीनी सरकार के बिना किसी हस्तक्षेप के 14वें दलाई लामा के उत्तराधिकार की रक्षा के लिए एक नीति बनाए। परिषद ने सांसदों से आग्रह किया कि चीन द्वारा वर्तमान में तिब्बत की यात्रा पर लगाए गए प्रतिबंधों की प्रतिक्रिया में चीनी लोगों पर भी प्रतिबंध लगाने के लिए अमेरिका के पारस्परिक पहुंच कानून को अपनाया जाए और मैग्निट्स्की अधिनियम के तहत तिब्बती मानवाधिकारों के प्रमुख दुरुपयोग करने वालों को प्रतिबंधित किया जाए।

पूरे ऑस्ट्रेलिया में 15 युवा तिब्बतियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने लगभग 30 ऑस्ट्रेलियाई सांसदों और सभी दलों के सीनेटरों से मुलाकात की।

1000 से अधिक ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों ने 'चीनी सरकार के हस्तक्षेप के बिना केवल तिब्बती बौद्ध परंपराओं और रीति-रिवाजों के माध्यम से चयनित दलाई लामा को मान्यता देने' के संकल्प पर हस्ताक्षर किए हैं।

ऑस्ट्रेलियाई सीनेट (ऊपरी सदन) में अपने मुख्य भाषण में ग्रीन्स की सीनेटर जेनेट राइस ने तिब्बती प्रतिनिधियों की उपस्थिति पर उनका स्वागत किया, जिसमें प्रतिनिधि कर्मा सिंगी शामिल थे। इनके साथ सीनेटर ने जून में आठवें डब्ल्यूपीसीटी में भाग लिया। उस समय तिब्बती सांसद तेनज़िन फोनस्टोक डोरिंग और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी शामिल थे।

इस दिन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यह दिन तिब्बत में शांति, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की वकालत करने के लिए सभी राजनीतिक दलों के संसद सदस्यों के साथ तिब्बती प्रतिनिधियों से मिलने का है।

सीनेटर राइस ने दलाई लामा के उत्तराधिकार और तिब्बत के लापता 11वें पंचेन लामा की चिंताओं को इंगित किया जिसे तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने उनके सामने उजागर किया था।

सीनेटर राइस ने अपने बयान में कहा,'आज गेंधुन चोएक्यी न्यिमा की उम्र 30 साल से अधिक होगी। तिब्बत की पारंपरिक रीतियां, संस्कृति और तिब्बती बौद्ध धर्म खतरे में हैं। दलाई लामा की तस्वीर ले जाने या रखने पर कठोर दंड मिलता है, जिसमें कारावास भी शामिल है।

उन्होंने कहीं भी मानवाधिकारों की रक्षा में अपनी पार्टी और ऑस्ट्रेलियाई सरकार की प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ वह कड़ी आवाज में बोलती रहेंगी।

उन्होंने कहा,'हम ऑस्ट्रेलियाई सरकार से तिब्बती बौद्ध धर्म की रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप करने के किसी भी प्रयास का विरोध करने और केवल तिब्बती बौद्ध परंपराओं और रीति-रिवाजों द्वारा चुने गए दलाई लामा को मान्यता देने का आग्रह करते हैं। मैंने आज नोटिस पेपर पर इस आशय का एक प्रस्ताव दर्ज किया है, जिसे मैं इस स्थान पर हरसंभव तरीके से उठाना जारी रखूंगी।

तिब्बत लॉबी दिवस तिब्बत समुदाय संघों के सहयोग से ऑस्ट्रेलिया- तिब्बत परिषद द्वारा आयोजित एक वार्षिक कार्यक्रम है,जहां तिब्बती और तिब्बत समर्थक लोग तिब्बत से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर ऑस्ट्रेलियाई सांसदों से मिलने और बात करने के लिए के लिए कैनबरा में इकट्ठा होते हैं।

❖❖❖❖❖

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

November, 2022, Years: 43 Issue: 11 Regd No. : RNI 34636-79

भारत- तिब्बत मैत्री संघ के सम्मेलन में सिक्योंग पेंपा छेरिंग,
बिहार के मंत्री श्रवण कुमार और डॉ आनंद कुमार।

लैटिन अमेरिका में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग के साथ मैक्सिको की
कांग्रेस के फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत पार्लियामेंटरी ग्रुप के सदस्य।